R.N.I. No. 25078/72 S.S.P./L.W.N.P./265/02/2006-08 Mo. : 9935213686

40 सालों में पसमांदा मंसूरी समाज की दबी और कमजोर आवाज को फर्श से अर्श की बुलंदियों पर पहुँचाने वाला अलमबरदार

मंसूरी पैग़ाम

मूल्य रु0 10/- लखनऊ 21

सुल्तान टीपू

मुम्बई काण्ड के शहीदों को सलाम

मजार पर चिरागां करते हुए अध्यक्ष अनीस मंसूरी, उत्तर प्रदेश

मजार पर आतंकवाद के खात्मे की दुआ करते सज्जादा नशीन जमीर अहमद खान वारसी व अन्य

मजार पर आतंकवाद के खात्मे की दुआ करते सज्जादा नशीन जमीर अहमद खान वारसी व अन्य

Scanned with OKEN Scanner

S.S.P/L.W.N.P/265/02/2006-08 R.N.I. No. 25078/72

मंसूरी पैग़ाम

लखनऊ 21

17 साल, 48 हिस्सा, 28 दिसम्बर 08

मेम्बर साज़ी

एक साल	150 /=
तीन साल	300 /=
लाईफ मेम्बर	1500 /=
सरपरस्त	5100 /=

एक नज़र में

नया साल	–	4
शहीदों को सलाम	–	5
तीन रोजा दौरा	–	6
सर्वजन हिताय	–	8
रतलाम शादियाँ	–	9
कोंच इज्तिमाई शादियाँ	–	10
हज रुहानी इज्तिमा	–	13
ईच वन–टीच वन	–	15
टीपू सुल्तान डे	–	17
छुपे हुए लाल	–	18
पूर्वी उ.प्र. दौरा	–	19
धनौरी का जनसैलाब	–	21
मंसूरी बैतुलमाल	–	22
वक्त की जरुरत	–	24
सियासी बेदारी	–	25
मुजाहिदे कौम	–	27
इस्लामी सभ्यता	–	31
बसपा के लिए अब दिल्ली दूर नहीं		33
विलादत हज़0 मंसूर	–	35
रिश्तों की जानकारी	–	36

खानदाने मंसूरी पैग़ाम

बानिये तंजीम

आली जनाब मुनीर बख्श मंसूरी जालौनवी

सरपरस्त शोर-ए-इम्त्याजी

आली जनाब कलीमुद्दीन शम्स, कलकत्ता

आली जनाब एच0 इब्राहीम, कर्नाटक

प्रधान सम्पादक

हाजी नबी बख्श मंसूरी M- 9935213686

सह-सम्पादक

दिलशाद मंसूरी

फोटोग्राफर

इकराम मंसूरी M- 9415171300

सरपरस्त

जनाब के. नूर मोहम्मद मंसूरी, अनन्तपुर, A.P.

जनाब गुल मोहम्मद मंसूरी, जयपुर

जनाब वकील अहमद मंसूरी, लखनऊ

जनाब हाजी रवीउल्ला मंसूरी, कानपुर

जनाब शेख मो0 रफीक मंसूरी पार्षद, मुम्बई

जनाब हाजी मो0 तय्यब मंसूरी, मुम्बई

जनाब अब्दुल हसन मंसूरी (मामू), दिल्ली

जनाब ए. जलील मंसूरी, मुम्बई

आफिस नामानिगार-

आफताब आलम मंसूरी M- 9839829019

मंसूरी पैग़ाम के किसी भी वाद-विवाद के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।

नया साल मुबारक हो

इस्लाम का पहला और आखिरी महीना हमें कुर्बानी का सबक देता है कि जुल्म के आगे मत झुको, आप ताकत या तादाद में कितने ही कम क्यों न हों, ईद के मुबारक मौके पर गले मिलो और एक दूसरे को मुबारकबाद दो।

नये साल का आग़ाज़ दुनिया की मुख्तलिफ कौमों में अपने किसी कौमी पेशवा की योम-ए-विलादत या किसी कौमी घटना को बुनियाद बनाया है लेकिन हमारे नबी सल्ल. नें इस्लाम की सरबुलंदी के लिए अपने वतन को छोड़ा जिसे हम हिजरत के नाम से जानते हैं यही हिजरत का वाक़्या इस्लामिक साल के आग़ाज़ की बुनियाद पड़ी। यहां एक सवाल पैदा होता है कि आखिर मुसलमानों ने अपने साल की शुरूआत के लिए हिजरत को ही क्यों चुना, हकीकत ये है कि हिज़रत मुसलमानों की जिन्दगी का ऐसा मोड़ है जहां से अचानक गमों के बादल हट कर खुशी का दौर शुरू हो जाता है। मक्का शरीफ की 13 साला जिन्दगी में गिने-चुने 60 या 65 लोग मुसलमान हुए थे, लेकिन मक्का छोड़ते ही मुसलमानों की जिन्दगी में एक ऐसा इंकलाब आया और देखते ही देखते सिर्फ 10 साल की मुद्दत में 11 लाख वर्गमील यानी भारत के बराबर, 274 वर्गमील रोजाना की रफतार से कामयाबी हासिल की और दुनिया की दो बड़ी ताकतें रोम और ईरान से आगे बढ़ गईं। इस कामयाबी में सिर्फ 127 मुसलमान ज़खमी और 259 शहीद हुए। बिरोधियों में 127 ज़ख्मी और 1018 मकतूल हुए थे।

नये साल की मुबारकबाद देने का चलन आज सारी दुनिया में नज़र आता है, लेकिन हमारे नबी सल्ल. ने ईद के मुबारक मौके पर एक दूसरे को मुबारकबाद देने और गले मिलने का हुक्म दिया था, लेकिन कितने ऐसे मुसलमान है जो ईद की मुबारकबाद नये साल की तरह पावंदी के साथ अपने अहबाब को देते हैं।

सिर्फ मुबारकबाद ही नहीं बल्कि हमारी जिन्दगी में बहुत से ऐसे गैर इस्लामी रस्मोरिवाज घुस आये हैं जैसे- मंगनी, शादी और गमी की रस्में वगैरह। अलगरज महद से लहद तक हम गैर इस्लामी मआसरे में रंग चुके हैं। दीन ने सिखाया था कि सारे मुसलमान भाई-भाई हैं (कुल्लो मुस्लिमुन इख्वतुन)। मुल्क का सारा मआसरा अलग-अलग समाज और कबीलों में बट रहा है, हर बिरादरी अपने को दूसरी बिरादरी से अफजल समझती है। ये एक ऐसी बीमारी है जो बढ़ती ही जा रही है, जो जिहालत और बेदीनी का नतीजा है। हम दूसरी कौमों की नकल करने में अपना फख्र समझने लगे हैं जैस- जन्मदिन या खड़े होकर खाना खाने में।

हमार मकसद इस इबारत को किसी की तनकीद करना मकसूद नहीं बल्कि हम अपने इस्लामी तौर-तरीकों पर लोगों का रूझान दिलाना चाहते हैं। ये बड़ा काम अकेले मंसूरी पैग़ाम इदारा नहीं कर सकता जब तक कि आप सब की तवज्जो भी शामिल न हो। हमने बतौर एक हमदर्दी के नाते ये अर्जेहाल की है। किसी ने लिखा है कि फोड़े पर नस्तर लगाने वाला मरीज का दुश्मन नहीं होता, बल्कि वह जिस्म को साफ सुथरा रखने के लिए गंदे मआद्दे को बाहर निकाल कर अपनी दोस्ती व हमदर्दी का इज़हार करता है।

हमारे तमाम दोस्त-हमदर्द, कौमी रहनुमा और ओहदेदारान नई साल पर हरबार मुबारकबाद भेजते हैं, हम तमाम उन हमदर्दों को अलग-अलग जवाबदेही के लिए अपने को पैगाम के माली हालात खराब होने की वजह पर मजबूर पा रहे हैं, इसलिए इज्तिमाई तौर पर हम सबका पेशगी शुक्रिया अदा करते हैं और आपके मुताबिक आने वाले साल के लिए अपनी नेक ख्वाहिशात का इज़हार करते हुए दुआ करते हैं कि आने वाला साल हमारे समाज का पिछड़ापन, ग़ैरबराबरी, गैरइस्लामी रस्मोरिवाज के अंधेरों को दूर कर दीन और दुनिया में कामयाबी के रास्ते फराहम करे। आमीन!

Scanned with OKEN Scanner

शहीदों को सलाम

शहीदों की मजा़रों पर लगेंगे हर बरस मेले, वतन पर मिटने वालों का बाकी यही निशां होगा

मीटिंग में शरीकक हज़रात कैमरे की नज़र में

बम्बई आतंकवाद की घटना में मारे गये लोगों और जवानों की शहादत को सलाम। हज़रत बाबा कासिम शहीद शाह की दरगाह पर दुआ प्रोग्राम मुनक्किद। बग़ैर तफरीक सभी धर्मों और समाज के लोगों ने हिस्सा लिया।

लखनऊ, 5 दिसम्बर 08- आल इण्डिया जमीयतुल मंसूर सोसाइटी उ0प्र0 की एक मीटिंग दिलकुशा गार्डन, बिलायतीबाग में मुनक्किद हुई। जिसमें अवाम को खिताब करते हुए तंजीम के सदर जनाब अनीस मंसूरी लखनऊ नें कहा कि आतंकवाद देश की ही नहीं बल्कि दुनिया का मसअलः बनता जा रहा है। हाल की बम्बई घटना ने पूरी दुनिया के अमन पसंद लोगों को हिला कर रख दिया है। हम सब इस घटना की सख्त अल्फाज़ में मजम्मत करते हैं। आतंकवाद के खातमें के लिए पूरे मुल्क में माहौल तैयार हो गया है। ऐसे में हमारी तंजीम ने महसूस किया कि आतंकवाद के खातमें के लिए किसी ऐसे मकाम को चुना जाये जो साम्प्रदायिक सदभावना का मरकज़ हो। इस सिलसिले में हज़रत कासिम शहीद शाह की दरगाह को चुना गया, जहां से आतंकवाद के खातमें और बम्बई के जांबाज़ शहीदों को सलाम किया जाये।

तंजीम के तमामी हज़रात और तमामी कौमी रहनुमा बगैर तफरीक़-ए-मज़हब, मिल्लत दरगाह हज़रत बाबा कासिम शहीद रह0, दिलकुशा गार्डन, बिलायती बाग, कैण्ट लखनऊ में जमा हुए। सज्जादा नशीन आली जनाब ज़मीर अहमद खां की सरपरस्ती में खास दुआ का एहतिमाम किया गया। इस दुआ में शरीक सभी हज़रात नें आमीन कहा। इसका मतलब यह है कि हम सब आतंकवाद के खातमें पर आपसी सहमती व्यक्त करते हैं। आज की इस खास दुआ और मोमबत्ती जलाकर चिरागां के ज़रिये बम्बई की आतंकवादी घटना में मारे गये लोगों व जवानों की शहादत को सलाम करते हैं।

इस मौके पर प्रदेश अध्यक्ष जनाब अनीस मंसूरी, जिला सदर जनाब सब्बन मंसूरी, प्रदेश सचिव जनाब मुख्तार मंसूरी, हाजी नबी मंसूरी, इकराम मंसूरी, मौलाना इलियास मंसूरी, कादिर बख्श मंसूरी, गुलाम जिलानी, मो0 अतीक, मेहबूब मंसूरी, यज़दानी, अब्दुल कमर, हाजी मुरादअली मंसूरी, रफीक, जुनैद, इब्राहीम, मुजीब, इश्तियाक, अशरफ, बब्लू, नरेन्द्र सिंह, राजन, अजय, गौरी शंकर, हंसराज, महेन्द्र रूपचन्द्र, अनिल, संतोष वर्मा, जगन्नाथ बाजपेई, सरदार मनमोहन सिंह, मंजीत सिंह, जगदीश केसरवानी, अनुपमा भटनागर, संजीव भाटिया के अलावा सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

Scanned with OKEN Scanner

सूबाई सदर का तीन रोज़ा दौरा

जिला जे.पी. नगर (अमरोहा) में कार्नर मीटिंग व तंजीमी जलसे, बरेली, महेशपुरा, सी.बी. गंज, फतेहगंज पश्चिमी, मिलक, भमौरा, रामपुर व मुरादाबाद में अनीस मंसूरी का ज़ोरदार इस्तकबाल।

फंजेड़ी में सूबाई सदर के साथ तंजीम का गुलपोशी से इस्तकबाल

जे0पी0 नगर- 23 अगस्त कस्बा- फंजेड़ी, तहसील- धनौरा में अवाम को खिताब करते हुए मेहमान-ए-खुसूसी जनाब अनीस मंसूरी नें कहा कि मुस्लिम समाज में सबसे बड़ी आबादी वाली मंसूरी समाज तालीम की कमी, सियासत से दूरी व कोई ठोस कारोबार न होने की वजह से इस कदर पिछड़ता चला गया कि बिरादरी को धुना जाति सूचक लफ्ज से जलील किया जाता है। इतनी बड़ी आबादी वाला मंसूरी समाज दूसरों का पिछलग्गू बन गया है, क्योंकि हमें कोई ऐसा रहनुमा नहीं मिला जिसने हमें तालीम व तरक्की का कोई रास्ता दिखाया होता, इसीलिए हमारे हालात बिगड़ते चले गये और अब समाज ऐसे चौराहे पर खड़ा है जहां से उसे कोई मंज़िल नज़र नहीं आ रही है।

अब हम सिर्फ दूसरों के लिए बैंक वोट बनकर के रह गये हैं। हमारी इतनी बड़ी आबादी जो किसी भी चुनाव को अपने बलबूते पर मुतासिर कर सकती है लेकिन आज तक कोई सियासी पार्टी इसका नाम लेने वाली नहीं है। उसकी वजह यही रही कि समाज के नेता नें सियासत में अपनी पहचान बनाई और आगे बढ़ गया और सियासी फायदे हासिल किये, लेकिन वो आगे बढ़कर भूल गया कि मैं आज जिस ऊँचे मंसब पर हूँ यह उसी मंसूरी समाज की देन है जिसका खून मेरी रगों में दौड़ रहा है। उस लीडर नें मंसूरी समाज की पहचान को छिपाया इससे समाज में व्यक्तिवाद का

बोलवाला तो रहा लेकिन समाज को सिरे से ही नकार दिया गया। इस वजह से मंसूरी बिरादरी के वोट व सपोर्ट को किसी सियासी पार्टी नें कुबूल ही नहीं किया और न उस वोट की गिनती समाज के साथ की। यही वजह रही कि समाज तमाम सियासी पार्टियों का पिछलग्गू बन कर रह गया, व्यक्ति पर बिरादरी हाबी नही हो सकी।

दूसरी तालीम की कमी, इससे हमारे हाथ से दीन व दुनिया दोनो निकल गये, हमारा शोषण किया गया, शोषण करने वाला कोई दूसरा नहीं मुस्लिम समाज के आला कहे जाने वाले हज़रात हैं, क्योंकि हिन्दू तो हमें मुसलमान समझता है लेकिन मुस्लिम लीडर हमें सिर्फ पिछड़े समाज का बेहना, धुना, नद्दाफ, पिंजारा समझ कर दूरी बनाने में फख्र समझता है। सरकार की तरफ से गरीबों के लिए तरक्की के तमाम मौके फराहम किये गये लेकिन किसी मुस्लिम लीडर नें इसकी जरूरत नहीं समझी कि पिछड़े मुसलमानों का हक इन्हें दिलाया जाये बल्कि किया यह गया कि आला जाति के मुसलमानों ने पिछड़ी जाति के सर्टीफिकेट बनवाकर सरकारी सुविधायें हासिल कर लीं, अगर कोई शिकायत भी गयी तो उसे रफा-दफा कर बराबर कर दिया। इस तरह 87 प्रतिशत का समाज पिछड़ता चला गया और 13 प्रतिशत वाले जो सरकार को घेरे पड़े हैं उन्होंने पिछड़े समाज को अन्दर जाने की इन्ट्री ही नहीं दी। इसका नतीजा यह निकला कि मुस्लिम समाज जो कभी नौकरियों में 32 प्रतिशत हुआ करता था आज घटते - घटते 1.5 प्रतिशत रह गया। इस पिछड़ेपन के लिए पूरी तौर से जिम्मेदार अपने को आला मुसलमान समझने वाले लीडर हैं।

मंसूरी समाज के चन्द होशियार लोगों नें अपने बच्चें को अच्छी तालीम दिलाई और खुद तालीम हासिल करके समाज को भूल गये। अपने रिश्ते गैरबिरादरियों में किये। मंसूरी समाज की तालीमयाफ्ता लड़कियां गुर्बत की वजह से माकूल रिश्ते पाने से रह गईं। वे गरीब रिश्तेदार और घराने के लोग भाई-बहन जिनका पेट काटकर इनको तालीम दिलाई गई थी कि यह पढ़-लिख कर समाज की तरक्की में हाथ बटायेंगे, लेकिन वे गैरों से भी बदतर हो गये। उन्हें जब याद दिलाया जाता है कि आपतो मंसूरी बिरादरी से तालुक रखते हैं, तो वे जवाब देते हैं कि मंसूरी बिरादरी क्या होती है मैं नहीं जानता। उसने इन खूनी रिश्तों का भी ख्याल नहीं किया और बिरादरी को गुर्बत में जीने को मजबूर कर दिया।

हम देख रहे हैं कि पूर्वी उ0प्र0 में ज्यादा गुर्बत है। पश्चिमी उ0प्र0 में लोग तालीम, रोजगार और नौकरियों में कामयाबी हासिल कर चुके हैं। तरक्कीयाफ्ता लोगों को चाहिए कि अपने तालीम और कारोबार में पिछड़े हुए बिरादरी भाईयों की मदद करें ताकि तरक्की के रास्ते उनके लिए भी खुल सकें।

तकरीर में हिस्सा लेने वालों में जनाब नसीम मंसूरी, खुर्शेद मंसूरी, सरताज मंसूरी, मुख्तार मंसूरी, इब्राहीम मंसूरी, फारूख मंसूरी, ज़ाकिर मंसूरी, जफर मंसूरी, आबू भाई मंसूरी, हासिम अली मंसूरी, अंजुम अली एडवोकेट, नौशाद मंसूरी और जनाब इरशाद मंसूरी नें निज़ामत का हक अदा किया।

मंसूरी ताज भाई Mo.: 9415126039
ताज आलू कम्पनी
कमीशन एजेन्ट एवं आर्डर सप्लायर
आलू, प्याज, लहसुन, शकरकन्दी, आलू बीज के प्रमुख आढ़ती
448, ओ0 ब्लाक, सब्जी मण्डी, किदवई नगर, कानपुर
सम्बन्धित फर्म : गुजरात ओनियन कम्पनी, गुजरात
61 गोल्डन आलू कम्पनी, जाधववाडी, औरंगाबाद

आसिम फुटवियर

इवास और केनवास के होलसेलर
पानी की टंकी रोड,
जलालाबाद, शाहजहाँपुर
Mo.: 9935186383

64 प्रो. मंसूरी आबिद भाई

जम जायेगा बदन में लहू बर्फ की तरह-करवट अभी भी आपने बदली अगर नहीं।।

सर्वजन हिताए सर्वजन सुखाए

ये नारा सिर्फ हिन्दू वर्णव्यवस्था के लिए? मुस्लिम, दलित और पसमांदा किसके सहारे? कौन है जो 85 प्रतिशत मुसलमानों को नज़रअंदाज करके सरकार को गुमराह कर रहा है, सिर्फ 15 प्रतिशत को मुसलमान कहा जा रहा है?

खलीलाबाद- दलित का पेशा अपनाये पिछड़े/अतिपिछड़े मुसलमानों एवं अन्य अतिपिछड़े सम्प्रदायों को शासन एवं प्रशासन में हिस्सेदारी दिलाने के लिए "एस फोर" संघर्ष कर रही है। तरक्की के इस दौर में बराबरी पर लाने के लिए इंतिज़ामिया की ईमानदार नीति और नियत का इंतिज़ार पिछड़े/अतिपिछड़े को कल भी था और आज भी है। आजादी के 60 वर्ष बाद सच्चर आयोग की रिपोर्ट बताती है कि दलितों का पेशा अपनाये मुसलमानों की हालत आज दलितों से बदतर हो गई है। सरकारी नौकरी, सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक, राजनैतिक दीगर पहलुओं पर इनका प्रतिशत शून्य हो गया है, तो इसके जिम्मेदार सत्ता में रहने वाले विभिन्न राजीतिक दलों के साथ-साथ सवर्ण जाति के मुसलमान जैसे- शेख, सैय्यद, काज़ी, मुग़ल, पठान आदि भी हैं, क्योंकि राजनैतिक पार्टियों में सवर्ण मुसलमान पहली पंक्ति में बैठे हुए हैं और दलितों का पेशा अपनाये मुसलमान पिछड़ी जातियां जो 85 प्रतिशत गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रही हैं उनकी समस्याओं के लिए कभी भी मुखर होकर न तो लोकसभा मे ही न विधान सभा में और न ही सड़कों पर आवाज़ उठाई गई। इन्हीं सवर्ण मुसलमानों नें पिछड़े मुसलमानों की जातियों का नाम सरकारी अभिलेखों में घृणा सूचक दर्ज कराया, जिससे मुसलमानों की आने वाली नस्ल में हीन भावना पैदा हो गईं और यह लोग अपने आपको छोटा तथा सवर्ण मुसलमानों को बड़ा समझे जिससे इन्हें गुलाम, लाचार आसानी से बनाया जा सके और समाज में ज़लील, रूसवाह हों और बड़े लोग समाज में सम्मानित रहें। बहुत सारे किस्से, कहानिया और सिलोगन गढ़ कर अपमानित करने का काम किया है। इसके लिए समाज सेवा संघर्ष समिति (एस फोर) आन्दोलन चलाकर केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकारों से मांग कर रही है कि मुस्लिम समाज के अन्दर जिन लोगों की हालत दलितों से बदतर है उन्हें बराबरी पर लाने के लिए आरक्षण दिलाया जाना चाहिए तथा संविधान की धारा 341 में संशोधन करते हुए मुस्लिम समाज के हलालखोर डोम, मेहतर, नट, बंजारा, जुलाहा, चिकवा, मनिहार, दर्जी, भंगी, नाई, भाट, फकीर, पासी, मोची, कुंजड़ा, रंगरेज़, दफाली, धुनिया, तेली, धोबी, भटियारा, हलवाई आदि जातियों को अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति का दर्जा देते हुए आबादी के अनुपात में आरक्षण दें। पूरे देश में पिछड़े मुसलमान एवं अन्य सामप्रदायों को जागरूक करके एस फोर सामाजिक बराबरी पर लाना चाहती है।

इदरीस अली
राष्ट्रीय अध्यक्ष, एस फोर

हमारी मांगें - 1. दलितों का पेशा अपनाये मुसलमान छात्र-छात्राओं में शिक्षा के प्रतिशत को बढ़ाने के लिए सरकार ब्लाक स्तर पर सरकारी जूनियर हाईस्कूल व दीगर तालीम का इंतिज़ाम करें। 2. मुस्लिम पिछड़ी जातियों का नाम तथा मोहल्लों का नाम आज भी सरकारी अभिलेखों में घृणा सूचक दर्ज है जैसे- जुलाहा टोला, भटियार टोला, धुनिया टोला आदि मुस्लिम सवर्ण जातियों के द्वारा इन जातियों के साथ गैर बराबरी का दर्जा दिया गया। जगह-जगह इन्हें इन्हीं के द्वारा दिये गये नामों से अपमानित किया गया। अतः हम मांग करते हैं कि पिछड़ी जातियों के घृणा सूचक नाम जो सरकारी अभिलेखों में दर्ज हैं उनके जनप्रतिनिधियों से पूछ कर आदरसूचक नाम रखे जायें। 3. भारत में जितनी भी शाही मस्ज़िदें हैं, जितना भी वक्फ सम्पत्तियां हैं, सब पर सवर्ण जाति के मुसलमान शाही पेशइमाम हैं, वक्फ सम्पत्तियों पर भी यही लोग मुतवल्ली बने हुए हैं तथा हज कमेटियां मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड आदि पर इन्हीं लोगों का कब्ज़ा है, इसलिए फौरी भारत की सभी शाही मस्ज़िदों पर पिछड़े/अतिपिछड़े मुसलमानों को कानून बनाकर पेशइमाम बनाया जाये। बक्फ सम्पत्तियों पर भी आबादी के अनुपात में मुतवल्ली बनाये जायें। हज कमेटियों व अन्य मुस्लिम सभी बोर्डों पर पसमादा मुसलमानों को नियुक्त किया जाये। 4. भूमिहीन पिछड़े/अतिपिछड़े मुसलमानों को तत्काल बंजर ज़मीन को इनके नाम स्थाई रूप से पट्टे किये जायें।

रतलाम में इज्तिमाई शादियाँ

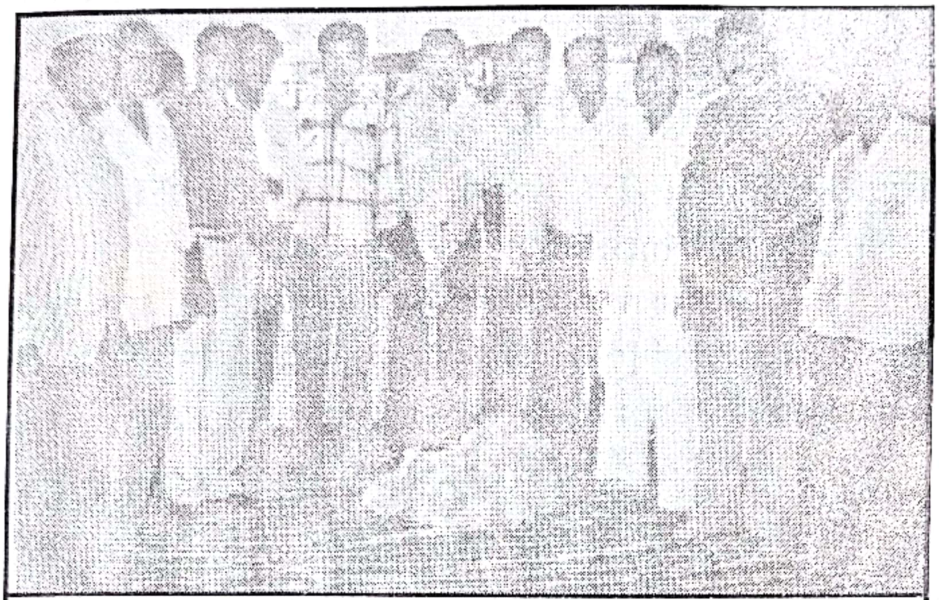

शहर सदर जनाब फैयाज़ मंसूरी का इस्तकबाल के बाद पोज़ देते हुए

निकाह सिर्फ इंसानी नफ्सियाती तामील का नाम नहीं हैं बल्कि यह एक इबादत और नूरी अमल है। गरीब नौजवान मर्द और औरतों के निकाह में अपनी ज़कात का पैसा लगाकर दोहरा सवाब हासिल कीजिए और अल्लाह की रजा़ के हकदार बनिये।

रतलाम म0प्र0- ऑल इण्डिया मंसूरी समाज के पर्चम तले और सदर की रहबरी में मकामी तंज़ीम मंसूरी समाज विकास समिति, रतलाम के ज़ेरे निगरानी 11 अक्टूबर 2008 को एक निः'शुल्क इज्तिमाई शादी सम्मेलन और तालीम के शोबे में बेहतर कामयाबी हासिल करने वाले बच्चों को इनामात और सर्टिफिकेट से नवाजकर उनकी हौसला अफजाई की गई।

जलसे की सदारत सूबाई सदर जनाब डा0 इसहाक मंसूरी, जिला-धार म0प्र0 ने की, निज़ामत का हक अदा किया जनाब फैय्याज मंसूरी सूबाई सचिव नें। जलसे के मेहमान-ए-खुसूसी आली जनाब मुबारक खां, उद्योपति मुकेस जी जैन थे। मेहमान-ए-खुसूसी नें अवाम को खिताब करते हुए कहा कि इज्तिमाई शादियों से यह चाहा जा रहा है कि समाज में बढ़ते हुए जहेज के लेन-देन को खत्म किया जाये, जो एक सामाजिक बुराई है और मेहगी शादियों को चलन से बाहर किया जाये ताकि गरीब नौजवान मर्द और औरतें अपने निकाह आसानी से कर सकें, साथ ही शादी के फिजूल खर्ची से बचे हुए पैसों को बच्चों की अच्छी तालीम पर खर्च करके उन्हें बेहतरीन नागरिक बनाया जाये ताकि वे मंसूरी समाज में फैली हुई बेदीनी की रस्मोरिवाज को खत्म करने और एक बेहतरीन मआसरे को जन्म देने के साथ ही मुल्क की तरक्की में बराबर के हकदार बनें।

मंसूरी समाज के लगभग 50 बच्चों को जिन्होंने 10वीं व 12वीं क्लास में कम से कम 60 प्रतिशत नम्बर हासिल किये हैं, उनकी हौसला अफजाई के लिए उन्हें इनामात और सर्टिफिकेट से नवाजा़ गया। तालीम के सिलसिले में वालदैन से गुजा़रिश की गई कि बच्चों को बेहतरीन तालीम के लिए हर तरह की मदद करें। अगर इस सिलसिले में कोई दिक्कत पेश आये तो इसके लिए जनाब फैयाज मंसूरी जो भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन (एन.एस.यू.आई.) के नगर अध्यक्ष हैं, से रावता कायम करें।

इज्तिमाई शादी सम्मेलन में 22 जोड़ों का निकाह अमल में आया, जिसे कामयाब बनाने के लिए जनाब वहीद मंसूरी, हाजी शौकत मंसूरी, पानी वाले बाबा, नूरूद्दीन मंसूरी, हाजी बाबू मंसूरी, हाजी सनाउल्लाह साहब, शाकिर मंसूरी और जनाब शौकत मंसूरी ने पूरा ताऊन किया।

उ0प्र0 तंजीम के सदर आली जनाब अनीस मंसूरी और तमाम ओहदेदारान नवउरूज़ जोड़ों के मुस्तकिल अजदवाज़ी जिन्दगी के लिए दुआवों की हसीन डालियां पेश करते हुए कामयाबी की दुआ करते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

कोंच चलो ।। कोंच चलो ।।

मंसूरी समाज का इज्तिमाई शादी प्रोग्राम

बतारीख : 4 फरवरी 2009, दिन बुधवार

बमुकाम : गल्ला मण्डी मैदान, कोंच, जिला- जालौन

किसी काम के लिए वक्त, पैसा और ताकत होना जरूरी है, इनको इकट्ठा करने के लिए दो तरीके हैं, पहला यह कि इनके लिए बड़ी मेहनत, लगन और वक्त की जरूरत है, दूसरा तरीका कि इन तीनों चीजों को बर्बादी से रोका जाए। इज्तिमाई शादियाँ इसका जीता-जागता नमूना है, अमल करके देखें, अल्लाह की रहमत आपके साथ होगी।

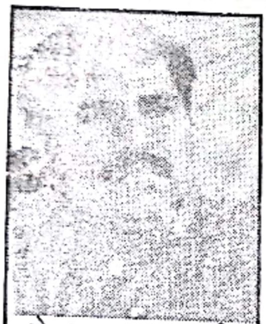

मेहमान-ए-खुसूसी
अनीस मंसूरी

इज्तिमाई निकाह प्रोग्राम के तहत निकाह कराने वाले वालदैन से गुज़ारिश है कि वह निकाह के बाद या पहले निकाह से ताल्लुक रखने वाली कोई तकरीब अपने घरों पर ऐसी न करें जिसमें फिजूल खर्ची और बेजा अखराजात का अंदेशा हो। जिसके करने से इज्तिमाई निकाह का मकसद ही फौत हो जाये।

हमारा मकसद-

1. मंसूरी समाज में ऐसी बेदारी पैदा करना, जिससे हमारे इज्तिमाई निज़ाम से हुजूर सल्ल. की सुन्नतें जिन्दा हों और समाज पिछड़ेपन के अंधेरे से फलाह व बहबूद के रास्ते पर आये।
2. बच्चे और बच्चियों को बेहतर तालीम का बन्दोबस्त।
3. शादियों में होने वाली फिजूल खर्ची और बेदीन की रस्मों पर पावंदी।
4. मंसूरी बिरादरी में सियासी व सामाजिक बेदारी के साथ ही सामाजिक संगठन को मज़बूत बनाना और कार्यकर्दगी अमल में लाना।
5. समाज को सियासत से जोड़ कर सरकारी योजनाओं का फायदा उठाना।
6. शादियों पर होने वाले खर्च व वक्त को बचाकर तालीम, कारोबार व जरूरते जिन्दगी पर खर्च करना।

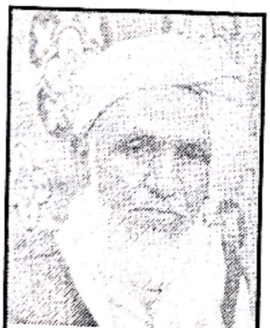

सलीम मंसूरी

क्या आपने कभी सोचा है कि इज्तिमाई निकाह से 500 जोड़ों पर कितना पैसा बचाया जा सकता है। जिससे एक आला तालीम इदारा कायम किया जा सकता है और हम कर ये रहे हैं कि इतने निकाह पर कितने परिवार अपनी खेती-ज़मीन, रोजगार और वक्त को बर्बाद कर खुद फटेहाल हो जाते हैं।

ज़रा गौर करें-

सेठ जलील मंसूरी

कि आप निकाह कर सर उठाकर जीना चाहते हैं या शर्मिंदगी की जिन्दगी बसर करना चाहते हैं। चूंकि बिरादरी में हर साल हज़ारों निकाह अमल में आते हैं, हम फिजूल खर्ची करके किस तेज़ी से तबाही की तरफ बढ़ रहे हैं।

बाकी पेज 23 पर

मेधावी छात्र एवं छात्राओं की हौंसला अफजाई

मध्य प्रदेश, रतलाम में मन्सूरी समाज की इज्तिमाई शादी समारोह

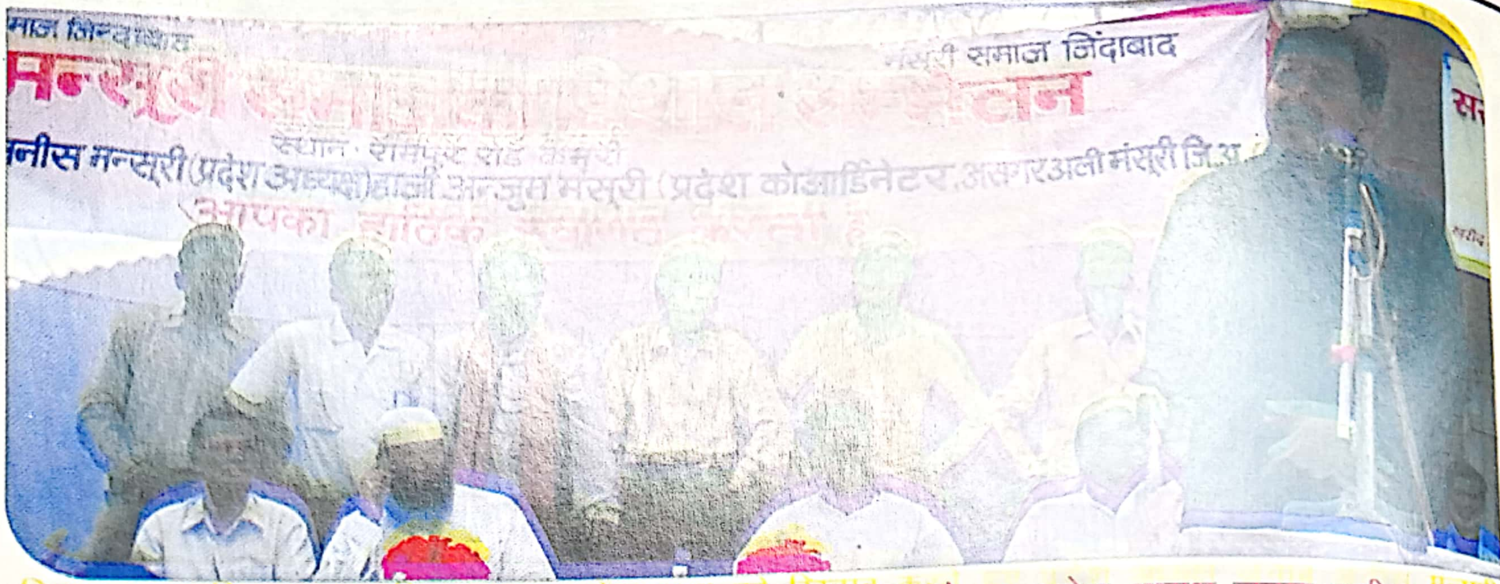

विधान सभा विलास पुर, जिला रामपुर में आवाम को खिताब करते हुए प्रदेश अध्यक्ष जनाब अनीस मन्सूरी

इज्तिमाई शादियों के सिलसिले में सदर अनीस मन्सूरी के पैतृक आवास कुण्डा (प्रतापगढ़) में मशविरा करते जिला जालौन के ओहदेदरान

साहनपुर बिजनौर में मन्सूरी समाज के ओहदेदरान को अमामा बांधकर इस्तकबाल

हज रूहानी आलमी इज्तिमा

लोगों पर अल्लाह का यह हक है कि जिसको इस घर तक पहुँचने की जानी व माली ताकत हो वह इस घर का तवाफ करे और जिसनें इस आयत पर अमल न किया उसे मालूम होना चाहिए कि अल्लाह तआला दुनिया वालों से बेनियाज़ है, वे हज करें या न करें इससे अल्लाह का कुछ बिगड़ने वाला नहीं। (आले इमरान)

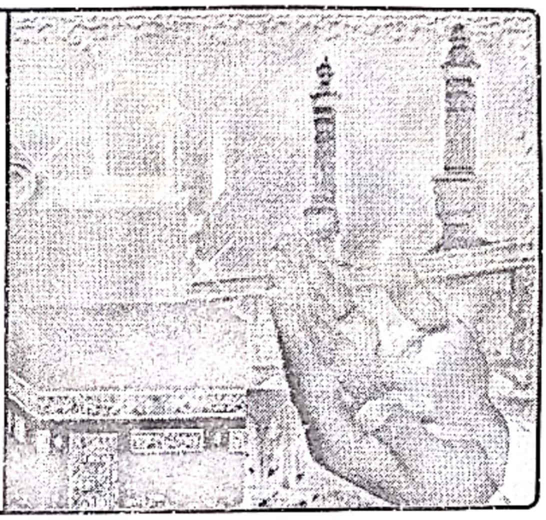

हज करना मज़हबे इस्लाम के पाँच अरकान में से एक है। जैसा कि हुज़ूर सल्ल0 ने इरशाद फरमाया कि इस्लाम की बुनियाद पाँच चीजों पर कायम है।

1. गवाही देना कि अल्लाह एक है, इसके सिवा कोई दूसरा माबूद नहीं और मुहम्मद सल्ल0 उसके बन्दे और रसूल हैं।
2. नमाज़ क़ायम करना।
3. ज़कात अदा करना।
4. माह रमज़ान के रोजे रखना।
5. हज वैतुल्लाह का तवाफ करना।

हज अर्बी ज़बान का लफ्ज़ है जिसके मायने इरादा करना है। हज फर्ज हो जाने के बाद यह लफ्ज़ "हज" तवाफ-ए-काबा और अरकान-ए-हज को अदा करने के इरादे के लिए मखसूस करार दिया गया है, यानि अब जब भी लफ्ज़-ए-हज बोला जायेगा तो उसका मतलब तवाफ-ए-काबा सई सफा-मरवा और वुकूफे अरफात का इरादा समझा जायेगा।

इंसानी जिन्दगी में इज्तिमाईयत और कुर्बानी की बड़ी कीमत है। हमारा समाज भी इन्हीं दो सुतूनों पर खड़ा है। हमारी बड़ी बदकिस्तमी है कि हम मुल्की और कौमी मआसी तरक्की तो चाहते हैं लेकिन इज्तिमाईयत की फिक्र और अवामी कुर्बानी को छोड़कर करना चाहते हैं।

हज एक ऐसी इबादत है जिसके ज़रिये इंसान सब्र के साथ मशक्कत उठाना सीखता है और नफ्स के साथ जिहाद करना, साथ ही अपनी ख्वाहिशात पर काबू पाने की मशक्कत करता है। क्योंकि हज के दौरान इंसान न तो लड़ाई-झगड़ा कर सकता है और न ही किसी को तकलीफ पहुँचा सकता है। हज एक ऐसी इबादत है जिसके दौरान इंसान का अपने मालिक से तआलुक बेहद बढ़ जाता है, क्योंकि इस वक्त बंदा अपने अल्लाह के हुजूर में अपनी मोहताजी, अपनी आजिजी का एतराफ करता है और अपने रब से मुआफी व मग़फिरत की उम्मीद रखता है।

हज की फरजियत का ऐलान सूरः अलइमरान की इस आयत के नुजूल के साथ हुआ। एक हदीस में हज़रत अबू हुरेरह रजि. से रवायत है कि रसूल सल्ल0 ने खुतबा दिया और उसमें इरशाद फरमाया कि लोगों तुम पर हज फर्ज कर दिया गया है, लिहाज़ा उसको अदा करने की फिक्र करो। एक शख्स ने अर्ज किया कि या रसूलुल्लाह क्या हर साल हम पर हज फर्ज है। आपने कोई जवाब नहीं दिया यहाँ तक कि तीन बार उस शख्स ने यही सवाल किया।

हज को अल्लाहतआला ने एक इज्तिमाई इबादत पर फर्ज किया है और साल में एक मखसूस दिन पर एक साथ हज करने का हुक्म है ताकि सारी दुनिया के मुसलमान एक साथ मिल कर इबादत करें और एक-दूसरे से मिलें। इस इज्तिमाई इबादत का एक मकसद यह भी है कि इससे दुनिया के तमाम इंसानों में फितरी मोहब्बत और हकीकी उखुवत पैदा हो।

Scanned with OKEN Scanner

हदीसेपाक में मज़कूर है कि एक मरतबा रसूल सल्ल0 से दरियाफ्त किया कि कौन सा अमल अफज़ल है, आपने इरशाद फरमाया अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाना, अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना और हज करना। एक हदीस शरीफ में मजकूर है कि रसूल सल्ल0 ने इरशाद फरमाया कि हज उन गुनाहों को मिटा देता है जो हज करने से पहले इंसान नें किये हों।

हज जायरीन की दुआऐं लें-

कबील-ए-मंसूर की तरफ से हज जायरीन 2008 के सिलसिले में हमें जो जानकारियां हासिल हुई हैं उनके मुताबिक हम उनको साया कर रहे हैं, जिन हज़रात की जानकारी आपको हो मेहरबानी करके इदारा मंसूरी पैग़ाम को भेज़ें ताकि अल्लाह के घर से लब्बैक कह कर घर वापस आने वाले हुज्जाज की दुआवों से अवाम फैज़ेआब हो सके।

जनाब हाजी रफीक मंसूरी, एम.आर. गारमेण्ट्स, जवाहर चौक, झांसी (अहलिया के साथ)
जनाब हाजी वली मोहम्मद मंसूरी, पानी की टंकी, पुलिया नम्बर-9, झांसी (अहलिया के साथ)
जनाब हाजी गुलाम मोहम्मद मंसूरी, पुलिया नम्बर-9,झांसी (अहलिया के साथ)
जनाब हाजी अब्दुल कुतुब मंसूरी, बड़ा कुऑ, पुलिया नम्बर-9, झांसी (अहलिया के साथ)
जनाब हाजी अब्दुल मंसूरी, बड़ा कुऑ, पुलिया नम्बर-9, झांसी
जनाब हाजी वहीद अहमद मंसूरी, बड़ा कुऑ, पुलिया नम्बर-9, झांसी (अहलिया के साथ)
जनाब हाजी मोहम्मद मदीन मंसूरी, पुलिया नम्बर-9, झांसी
जनाब हाजी मोहम्मद हनीफ मंसूरी, इलाहाबादी, झांसी (अहलिया के साथ)
जनाब हाजी मोहम्मद नईम मंसूरी, छोटी मस्ज़िद, झांसी (अहलिया के साथ)
जनाब हाजी अय्यूब मंसूरी, चाकी वाले, जालौन
जनाब हाजी रहीम बख्श मंसूरी लेखपाल, मोहल्ला पुरानीहाट, जालौन
जनाब हाजी अलीम मंसूरी, शहर पेशइमाम, ललितपुर
जनाब हाजी मुनीर खाँ मंसूरी, ललितपुर (अहलिया के साथ)
जनाब हाजी नमाजी मंसूरी, ललितपुर
जनाब हाजी अनीस मंसूरी, ललितपुर (अहलिया के साथ)
जनाब हाजी वाजिद अली मंसूरी, इन्द्रानगर, लखनऊ (अहलिया के साथ)
जनाब हाजी महमूद हसन मंसूरी, हमीरपुर (अहलिया के साथ)
जनाब हाजी अंजुम अली मंसूरी एडवोकेट, बरेली (अहलिया के साथ)
जनाब हाजी विकार अहमद मंसूरी, रबड़ी टोला, बरेली
जनाब हाजी साबिर अली मंसूरी, मामा बेकरी, बरेली (वालिदा के साथ)
जनाब हाजी निसार अहमद मंसूरी, महेशपुरा, बरेली
जनाब हाजी मो0 याकूब मंसूरी, नजीबाबाद, जिला- बिजनौर
जनाब हाजी मोहतरिमा फातिमा बेगम मंसूरी, प्रिंसिपल, नजीबाबाद, जिला- बिजनौर
जनाब हाजी मो0 आकिल मंसूरी, पीलीभीत (वालिद व अहलिया के साथ)
जनाब हाजी मो0 हनीफ मंसूरी, पीलीभीत (वालिदा व अहलिया के साथ)
जनाब हाजी रहमतुल्लाह मंसूरी, पीलीभीत
जनाब हाजी मौलाना आफाक मंसूरी, पीलीभीत
जनाब हाजी नन्हे मंसूरी, पीलीभीत
जनाब हाजी अनीस मंसूरी, बीसलपुर, पीलीभीत (अहलिया के साथ)
जनाब हाजी मौलाबख्श मंसूरी, बीसलपुर, पीलीभीत (अहलिया के साथ)
जनाब हाजी मुन्ने खां मंसूरी, पूरनपुर, पीलीभीत
जनाब हाजी लल्ली बेगम मंसूरी, पूरनपुर, पीलीभीत

Scanned with OKEN Scanner

तालीम ईचवन-टीचवन के फार्मूले पर

तालीम के लिए ईचवन-टीचवन का फार्मूला लागू करें और दीन के साथ दुनियावी तालीम जरूर दें। पहले बात कमजो़रों की बाद में सबकी। खर्चीली शादियों पर पाबंदी लगे। इस्लाम नें मसावात का दर्स दिया।

साहनपुर, बिजनौर- 24 अगस्त 08 आल इण्डिया जमीयतुल मंसूर सोसाइटी (मंसूरी समाज) का एक रोजा कान्फ्रेंस तयशुदा प्रोग्राम के मुताबिक मुनक्किद हुई। जलसे की सदारत सूबे के सदर जनाब अनीस मंसूरी ने की और मेहमान-ए-खुसूसी आली जनाब शीशराम जी एम.एल.ए. व आली जनाब तसलीम अहमद साहब एम.एल.ए. सुल्तानपुर, उत्तराखण्ड, निज़ामत की बागडोर सम्भाली जनाब इरशाद मंसूरी व शमशाद मंसूरी नें।

मेहमान-ए-खुसूसी जनाब शीशराम जी ने अवाम को खिताब करते हुए कहा कि बहन मायावती जी नें मंसूरी समाज को अनीस मंसूरी की शक्ल में एक कॉआर्डीनेटर प्रदान किया इससे बी.एस.पी. का लगाव मंसूरी समाज की तरफ साफ नज़र आता हैं। आप हज़रात नें भी अपने एहसान को चुकाने में देरी नहीं की और विधानसभा के चुनाव में रिजर्व सीटों पर जहां अनीस मंसूरी को लगाया गया था वहां मंसूरी समाज नें बी.एस.पी. को अपना वोट देकर 82 में से 62 सीटों पर जीत दर्ज कराई। आपके थोड़े-थोड़े वोटों नें बड़ा काम अंजाम दिया। अगले लोकसभा के चुनाव में हम सब को बहन मायावती जी को दिल्ली की गद्दी पर बिठाने के लिए तन-मन-धन से काम करना होगा तभी हम अपनी मंजिल पा सकते हैं।

मेहमान-ए-खुसूसी जनाब तसलीम अहमद साहब जो कि पसमांदा बिरादरी से एम.एल.ए. हैं उन्होंने अवाम को खिताब करते हुए कहा कि पसमांदा व दस्तकार बिरादरियों के हुकूक को दबाया गया है, सभी को भारतीय संविधान नें जीने का बराबर हक दिया है। लेकिन मुस्लिम समाज के ही लोगों ने आपस में ही एक दूसरे को छोटा-बड़ा और अगला-पिछला बनाकर समाज में एक दरार डाल दी है। इसका सीधा नुकसान मुसलमानों को हुआ है, लेकिन अब सामाजिक परिवार्तन का वक्त आया है, पेशावर बिरादरियों को बी.एस.पी. की तरफ से उनके हुकूक दिये जा रहे हैं। कानून नें सभी को एक प्लेटफार्म पर लाकर खड़ा कर दिया है।

दुनिया-ए-इस्लाम ने मसावात का दर्स दिया था, सभी मुसलमान रोटी-बेटी के लिए आज़ाद थे, लेकिन अपने को अशराफ समझने वाले मुसलमानों ने अपने मफात के मौकों पर तो सबको बराबर बताया लेकिन शादी-व्याह में बड़े-छोटे, अशराफ-रजील कहकर जलील किया फिर बराबरी कैसी।

सदर आली जनाब अनीस मंसूरी ने अपने खिताब में कहा कि तंजीमी काम में सबसे पहली कामयाबी हमें बुन्देलखण्ड से मिली ज़हां कमेटियों के गठन के साथ-साथ हम राठ व महोबा में इज्तिमाई शादियों के दो प्रोग्राम कराने में कामयाब

हुए हैं। अब हमारा तीसरा प्रोग्राम बुन्देलखण्ड के जिला-जालौन की तहसील- कोंच में दिनांक 4 फरवरी 2009, दिन बुध को होने जा रहा है। पश्चिमी उ0प्र0 के बाद अब हमारा अगला कदम पूर्वी उ0प्र0 की तरफ बढ़ रहा है। उ0प्र0 में हमारी आबादी लगभग 1.50 करोड़ होते हुए भी हम अपनी पहचान सामाजी व सियासी हलकों में नहीं बना सके हैं। अब हम अपनी पहचान बनाने के लिए लखनऊ में एक जनजागरण रैली की तैयारी कर रहे हैं ताकि समाज एहसासेकमतरी से उभर कर ऊपर आये।

तालीम के सिलसिले में आपने कहा कि तालीम के बगैर समाज अधूरा है। हमें दीन के साथ ही दुनिया की तालीम भी जरूरी है। हमारे नबी सल्ल0 ने फरमाया था कि इल्म सीखो चाहे चीन जाना पड़े। हम लड़के और लड़कियों की तालीम के बारे में फर्क करते हैं और बच्चियों को तालीम दिलाने में कोताही बरतते हैं ऐसा हरगिज़ नहीं होना चाहिए, लड़कियाँ दो खानदानों की इज्जत होती हैं। उनसे होने वाली औलाद तालीमयाफ्ता होगी क्योंकि बच्चों का पहला स्कूल मां की गोद होती है, अगर मां तालीमयाफ्ता होगी तो बच्चे भी तालीमयाफ्ता होंगे। बेशक आज तालीम मंहगी हो गई है अगर समाज का हर नवजवान ईचवन-टीचवन के फार्मूले पर अमल करे। एक-एक को पढ़ाये तो समाज का हर बच्चा तालीमयाफ्ता हो सकता है।

शादियों पर होने वाली फिजूलखर्ची और बेजारस्मोरिवाज को रोकना होगा तभी समाज तरक्की कर सकता है। बेजारस्मोरिवाज में फंस कर हम अपनी गाढ़ी कमाई को बर्बाद कर रहे हैं। नाच-रंग पर पूरी तरह से पावंदी लगानी होगी क्योंकि दीन हमें इसकी इजाज़त नहीं देता। अगर हम बच्चों को अच्छी तालीम से नवाज़ना चाहते हैं तो हमें इज्तिमाई शादियों पर अमल करना ही होगा।

सियासत में हमारा दखल जरूरी है, क्योंकि आजका हर मामला चाहे रोजी-रोटी का हो चाहे नौकरी या लड़ाई-झगड़े का हो दुनियावी सारे मामले सियासत के चारोंओर चक्कर लगाते हैं। उ0प्र0 में इतनी बड़ी बिरादरी की आबादी होते हुए भी हम अपने मसाइल के हल के लिए दूसरों का मुंह ताकते हैं। हमने आज तक अपना कोई नेता नही चुना, जिसे नेता माना भी वे सभी आपनी पहचान को छुपाने वाले थे। इसी वजह से समाज की तरक्की नहीं हो सकी। हम हर चुनाव में सभी राजनैतिक पार्टियों को बदल-बदल कर वोट देते आये हैं इस उम्मीद पर कि शयद ये अब हमारी मदद करेंगीं। लेकिन नतीजा कुछ हासिल नही हुआ, क्योंकि हम किसी एक के होकर नहीं रहे। हमें किसी एक पार्टी में बहुमत दिखाना होगा और अपने नेता की बात पर अमल करना होगा तभी हम कामयाब हो सकते हैं। उ0प्र0 में हमसे कम आबादी वाली बिरादरियां हुकूमत में हैं। हमें संगठित होकर मज़बूत होना होगा।

समाज के लोग अपने हुकूक पाने के लिए बड़ी जल्दी उतावले हो जाते हैं उन्हें सब्र से काम लेना होगा। आज की यह मेहनत आने वाली पीढ़ियों के लिए फायदेमंद होगी, इसमें वक्त भी लगेगा, हुकूमत इतनी आसानी से नहीं मिलती। ताकत हासिल करके कभी-कभी उसे छीनना भी पड़ता है। अगर हम ताकतवर और संगठित हुए तो अपने हुकूक आसानी से हासिल कर सकते हैं। सामाजिक काम अंजाम देने में हमारे सामने अपने ही नहीं ऊँची जाति वाले मुसलमान रूकावट डाल रहे हैं। वे हमारे काम को दीन में तोड़ पैदा करना बताते हैं, ईमान, रोजा, नमाज, हज, ज़कात का नाम दीन है। हमने कभी इन फरीजों में कमी या ज्यादती की बात नहीं कही। अगर हम अपना सरकार से हक मांग रहे हैं तो इसमें बुराई क्या है। हम अच्छी तालीम हासिल करना चाहते हैं, सियासत के लिए समाज को बेदार करना चाहते हैं ताकि हम अपना हक हासिल कर सकें। सियासत में बैठे अशराफ मुसलमानों को डर है कि अगर यह सियासत में आ गये तो हमारी हकमारी बन्द हो जायेगी।

तकरीर में हिस्सा लेने वालों में जनाब सरताज मंसूरी, मो0 अहमद मंसूरी, अंजुल अली एडवोकेट, नसीम मंसूरी, अल्लामा मंसूरी, इरफान मंसूरी, नसीर मंसूरी, शकील एडवोकेट, अल्लादिया मंसूरी, डा0 फहीम मंसूरी व दीगर लोगों ने हिस्सा लेकर जलसे को कामयाब बनाया।

Scanned with OKEN Scanner

टीपू सुलतान-डे

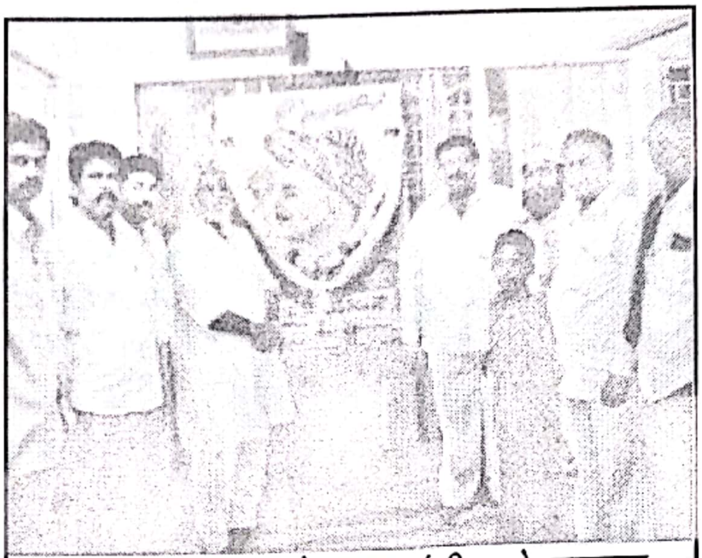

कप्पागल रसूल के साथ तंजीम के हज़रात

ऑल इण्डिया टीपू सुलतान फेडरेशन के ज़ेरे एहतिमाम और राष्ट्रीय सदर आली जनाब कप्पागल रसूल मंसूरी के ज़ेरे निगरानी जल्सा मुनक्किद। मेहमान-ए-खुसूसी कर्नाटक प्रांत के वक्फ मिनिस्टर जनाब रोशन बेग साहब नें कौमी खिदमात के लिए जनाब कप्पागल रसूल मंसूरी साहब को एवार्ड पेश किया।

बल्लारी कर्नाटक- पैग़ाम नामानिगार जनाब अब्दुल सलाम मंसूरी, मकराना (राजस्थान) से मिली जानकारी के तहत 10 अगस्त 08 को जश्न-ए-टीपू सुलतान-डे बड़ी धूम-धाम से बल्लारी में मनाया गया। जिसकी सदारत जनाब मो0 इब्राहीम मंसूरी, मस्जिद हुसैन नगर, बल्लारी नें की। निज़ामत का हक अदा किया जनाब कप्पागल रसूल साहब नें।

जल्से के मेहमान-ए-खुसूसी आली जनाब बेग साहब नें अवाम को खिताब करते हुए कहा कि हिन्दुस्तान में बर्तानियां की नवआवादकार ईस्ट इण्डिया कम्पनी को एक ऐसा ही सख्त मुकाबला टीपू सुलतान से करना पड़ा। बंगाल में सिराजुद्दौला को जेर करने और 1757 की जंग प्लासी में जीतने के बाद अंग्रेजों ने समझ लिया था कि अब पूरे हिन्दुस्तान में कोई हुकूमत या शख्सियत इनके सामने सर नहीं उठा सकती है। वह शुमाली हिन्दुस्तान में कामयाबी के साथ अपने फैलाये हुए जाल से अंदाज़ कर रहे थे कि जुनूबी हिन्द से उभरने वाली मराठों की ताकत बिलआखिर इनकी शाज़िशों का शिकार हो जायेगी, जबकि अहमद शाह अफदाली नें पानीपत के मैदान में 1761 में इस ताकत की कमर तोड़ दी थी। लेकिन नवाब हैदरअली के तहत मैसूर में सल्तनत खुदादाद के उरूज नें अंग्रेजों को परेशान कर दिया और जब इस सल्तनत का वली अहद हैदरअली का लायक फरजंद टीपू सुल्तान तख्त पर बैठा तो उसकी सुजाअत व फरासत नें अंग्रेजों के हौसले उड़ा दिये।

टीपू का चहरा रौबदार था, जिस पर बादशाहों वाला वकार और जलाल था। सुलतान की पोशाक कमीज, जाकेट, पैजामा और पगड़ी थी व कमर में पट्टा बांधता था। पगड़ी सुनहली-भारी और फैली हुई थी, उसके पहलू में तलवार होती थी।

बहादुरी व शुजाअत में भी टीपू शेर से कम न था, एक दिन वह फ्रांसीसी अफसर के साथ शिकार खेलने गया कि अचानक एक शेर वहा आ गया। अफसर ने जलदी से बंदूक उठाई और गोली चलाने वाला ही था कि टीपू ने बंदूक छींन कर फेंक दी। शेर ने इन दोनो पर हमला कर दिया, मगर पेशतर कि वह कोई नुकसान पहुंचाता टीपू तलवार लेकर उस पर टूट पड़ा और दम भर में उसका खातमा कर दिया।

टीपू हमेशा सोच-समझ कर बात करता था, उसके दरबार में हमेशा इल्मी, अख्लाकी और सियासी बाते होती थीं, वह दीन का शैदाई था, नमाज व रोज़े का बड़ी सख्ती से पावंद था।

इसी मौके पर राष्ट्रीय सदर जनाब कप्पागल रसूल साहब को कौमी खिदमात के लिए कर्नाटक वक्फ मिनिस्टर आली जनाब रोशन बेग साहब नें "जी.के.एस. एवार्ड बैंगलौर" पेश करते हुए कहा कि समाज को ऐसे ही ईमानदार समाज सेवी कौमी रहनुमा की जरूरत है ताकि इस बिगड़े हुए समाज को नई राहें हम्वार की जा सकें।

Scanned with OKEN Scanner

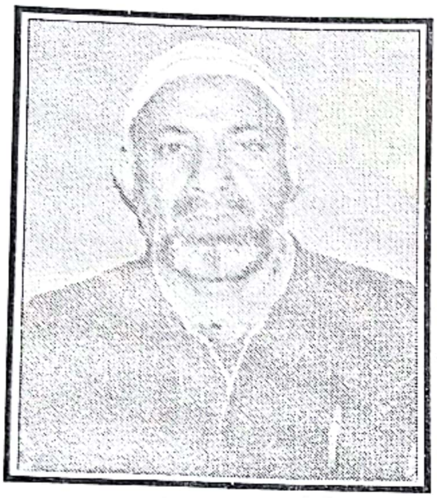

बिरादराने मंसूर को जिन पर नाज़ है

उन छुपे हुए लालों को उजागर कीजिए

तंदुरूस्ती हज़ार नियातम है, खेलों को बढ़ावा दीजिए, कामयाबी के साथ आगे बढ़ें और बढ़ायें ताकि मंसूरी समाज के साथ ही आपका नाम सुनहरे अक्षरों में लिखा जा सके।

इस उनवान के तहत इदारा मंसूरी पैग़ाम लखनऊ उन हज़रात का मुकम्मल तआरूफ कराता है जो मंसूरी समाज के लिए एक मिसालेराह हैं जैसा कि नीचे दिये गये मज़ामीन से ज़ाहिर होता है। इस सिलसिले को आगे बढ़ाने के लिए तमाम बिरादरने मंसूर से गुज़ारिश है कि अगले शुमारे के लिए कबीले के ऐसे आला हज़रात की तफसील इदारे को भेजें ताकि नौजवानों में एक हौसला पैदा हो और वे अपने नाम के साथ कबील-ए-मंसूर को भी रोशन करें।

जनाब रईस अहमद मंसूरी, लखनवी

आज़ाद नगर, छोटी मस्ज़िद, आलमबाग, लखनऊ ✆ : 9935871696

1- मंडलीय खेल-कूद प्रतियोगिता, लखीमपुर खीरी, उत्तर प्रदेश
सन् 1982-1983 (प्रथम स्थान)

2- मंडलीय खेल-कूद प्रतियोगिता, बरेली, उत्तर प्रदेश
सन् 1982-1983 (द्वितीय स्थान)

3- अखिल भारतीय सेवा दल खेल-कूद प्रतियोगिता, अहमदाबाद (गुजरात)
सन् 1982 (प्रथम स्थान) सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी, उत्तर प्रदेश

4- 30वीं प्रदेशीय प्रतियोगिता, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश
सन् 1984-1985 (प्रथम स्थान)

5- मंडलीय खेल-कूद प्रतियोगिता, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश
सन् 1985-1986 (प्रथम स्थान)

6- इन्दिरा स्मारक खेल प्रतियोगिता, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
सन् 1985 (प्रथम स्थान)

7- डिट्रिक कबड्डी एसोसिएशन, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
सन् 1985 (प्रथम स्थान)

8- हिन्दुस्तान एरोनॉस्टिक लिमिटेड, **HAL** लखनऊ, उत्तर प्रदेश
सन् 1987 (प्रथम स्थान)

9- 26वाँ प्रादेशिक ग्रामीण खेल-कूद, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
सन् 1989 (द्वितीय स्थान)

10- 14वीं स्टेट कबड्डी चेम्पियनशिप, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश
सन् 1987 (टीम मेनेजर)

11- 30वीं सीनियर राज्य कबड्डी प्रतियोगिता, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश
सन् 2003-2004 (प्रशिक्षक)

खेल के मैदान के मुस्तकबिल होनहार मंसूरी बच्चे

फारूख मंसूरी, लखनऊ

शारूख मंसूरी लखनऊ

संगठन मज़बूत करने के लिए

दौरा पूर्वी उत्तर प्रदेश

पश्चिमी उत्तर प्रदेश की तरह पूर्वी उत्तर प्रदेश में भी मंसूरी समाज को संगठित कर मज़बूत बनाने के लिए जनाब मुख्तार मंसूरी वर्किंग जनरल सेक्रेट्री के ज़ेरे निगरानी 22 नवम्बर से तीन रोजा दौरा बाराबंकी, बहराईच, बलरामपुर, गोंण्डा व सिद्धार्थनगर।

टीम के साथ अहमद मंसूरी (बाले)

लखनऊ- जमीयतुल मंसूर के ज़ेरेएहतिमाम मंसूरी समाज उ0प्र0 की एक टीम पश्चमी उत्तर प्रदेश में संगठन की कामयाबी के बाद अब पूर्वी उत्तर प्रदेश के दौरे पर पांच नुमाइन्दा टीम रवाना हुई जो ब्लाक से लेकर जिलों तक के तंज़ीमी ढ़ाचे को मुकम्मल तैयार कर तंजीम को मज़बूत बनायेगी।

तंज़ीम का सबसे पहला पड़ाव बाराबंकी हुआ जहां तंजीम के जिला सदर बब्लू मंसूरी नें बताया कि जिले का संगठन लगभग पूरा हो चुका है, अगले एक माह में जो बाकी है वो भी पूरा कर लिया जायेगा, फिर भी नुमाइन्दों ने अपना काम जारी रखा और जनाब मो0 शमीम मंसूरी रोशन ट्रोली वालों के ज़ेरे निगरानी दशहरा बाग हैदरगढ़ रोड पर एक कार्नर मीटिंग तलब की जिसके ज़रिये बाकी ब्लाकों में चुनाव कर तंजीमी ढ़ांचा मज़बूत करना था। इसकी जिम्मेदारी मो0 हनीफ मंसूरी जिला पंचायत सदस्य बी.एस.पी. कटरा बाराबंकी को सौंपी गई। मुलाकातों का दौर ग्राम रसौली, मुस्तफाबाद के बाद बरौलिया में रहा, जहां की जिम्मेदारी जनाब नौशाद मंसूरी नेता बी.एस.पी. (9794150105) को सौंपी गई।

दूसरी मीटिंग जनाब हाजी अली अहमद मंसूरी उर्फ बाले भाई कस्बा कैसरगंज, जिला- बहराईच के ज़ेरे सदारत मुनक्किद हुई जिसमें मकामी हज़रात के अलावा कुर्बोजवार, जरबल, बांसगांव, हरिहरपुर और बुलहा के लोगों नें हिस्सा लिया। आम राय से तय पाया गया कि जनाब बाले भाई की सरपरस्ती में हम सब मिलकर काम करेंगे और जल्द ही तहसील से ब्लाक तक की कमेटियां बनाकर मरकज़ को इत्तिला देंगे।

नुमाइन्दा टीम का अगला पड़ाव जिला सदर जनाब सफी उल्ला मंसूरी के ज़ेरे निगरानी बेहराइच में जगह-जगह मुलाकात कर सुस्त पड़ी हुई तंज़ीम में नई रूह फूंकने का सभी ने वायदा किया। जनाब मो0 सफी मंसूरी व जनाब अली हुसैन मंसूरी को जिम्मेदार बनाया गया।

अगला प्रोग्राम जनाब मेंहदी हसन मंसूरी सूबाई नायब सदर की ज़ेरे निगरानी मुस्लिम मुसाफिर खाना, गोण्डा में मुनक्किद हुआ, जिसमें आये हुए

Regd.- U.P.K.B.I.
हकीम बाबा मुमताज शाह का जड़ी बूटियों से बना दर्दनाशक
Ringnis Oil
बदन दर्द, जोड़ों का दर्द, बच्चों या बड़ों को सर्दी, फीलपांव, फायलेरिया, घंघा, खुजली (खरी), मस्से वाले बवासीर (साटिका), गठिया बाई (बयार), वगैरह के लिये रामवाण का काम करता है।
बाबा जड़ी-बूटी औषधि निर्माण
63 पोस्ट बाक्स- बड़ा गाँव, डिस्टिक- गोण्डा उ.प्र.

तमाम लोगों नें मिलकर काम करने का वायदा किया। जनाब मास्टर तौफीक मंसूरी साहब को सरपरस्त मुन्तखिब किया गया और जनाब अफजल मंसूरी को जिला स्टूडेण्ट संगठन की जिम्मेदारी सौंपी गई। जनाब अफजल मंसूरी साहब नें अवाम को मुखातिब करते हुए कहा कि मैं पूरी जिम्मेदारी के साथ समाज की खिदमत करूंगा और जल्द ही नवजवान तालिबेइल्मों को इकट्ठा करके सूबाई ऑफिस को इत्तिला देंगे।

प्रोग्राम में हिस्सा लेने वालों में जनाब शमीम अहमद मंसूरी, अशरफ हुसैन मंसूरी, खलील मंसूरी, अफसर मंसूरी, अफजाल मंसूरी, इस्लाम मंसूरी व जहीर मंसूरी नें हिस्सा लेकर काम को आगे बढ़ाने की बात कही।

दौरे का अगला मुकाम उतरौला व डुमरियागंज की मुलाकात के बाद जिला सिद्धार्थ नगर रहा, जहां जनाब हाजी बेचन अली मंसूरी की सदारत में एक मीटिंग मुनक्किद हुई, जिसकी निज़ामत का हक़ अदा किया मास्टर अब्दुल अजीज़ मंसूरी अख्तर साहब नें, मेहमान-ए-खुसूसी जनाब मुख्तार मंसूरी नें अवाम को खिताब करते हुए कहा कि उ.प्र. में मंसूरी समाज की आबादी लगभग 1 करोड़ 60 लाख है जो मुस्लिम बिरादरियों का 30 प्रतिशत होता है फिर भी तमाम राजनैतिक दलों में हमारा कोई नुमाइंदा नहीं है। हमें वोट बैंक की तरह इस्तेमाल किया जाता है लेकिन पांच साल बाद तमाम राजनैतिक पार्टियों को हमारी याद आती है, वोट लेकर भूलने की यह आदत जब तक बनी रहेगी जब तक हम अपने संगठन को मज़बूत नहीं करते और अपनी मांगे सामने नहीं रखते। सियासी जमाअतों में हमें कोई भी मकाम नहीं मिल सका क्योंकि अगड़ी जाति के मुसलमानों नें सभी सियासी पार्टियों पर कब्जा कर रखा है और वे किसी भी पिछड़ी जाति के मुसलमान को घुसने ही नहीं देते। इसलिए ज़रूरी हो गया है कि हम अपनी आवाज बुलंद करने के लिए संगठन को मज़बूत करें।

हाज़रीन नें यकीन दिलाया कि जल्द ही जिला स्तर का संगठन खड़ा कर एक प्रोग्राम मुनक्किद किया जायेगा, जिसमें शादियों की फिजूल खर्ची पर रोक-थाम और जहेज ऐसी लानत पर ग़ौर होगा। इज्तिमाई शादियों का चलन आम किया जायेगा। तालीम के ज़रिये एक अच्छा मआसरा तामीर किया जायेगा।

तकरीर में हिस्सा लेने वालों में जनाब हनीफ मंसूरी बस्ती, मंजूर अली मंसूरी, जमाल मंसूरी, मो० आजाद मंसूरी, अली मोहम्मद मंसूरी, मज़हर हुसैन मंसूरी (कल्लू कव्वाल) आखिर में मेज़बान जनाब मोहम्मद इसहाक मंसूरी ने आये हुए डेलीगेट्स और सभी लोगों का शुक्रिया अदा किया।

सिराज मंसूरी
केसरगंज, बहराइच

टेलरिंग की दुनिया का चमकता सितारा
Ph.: 0551-2345785

New Nice Tailors
स्पेशलिस्ट :
सूट-सफारीसूट-शेरवानी-पेन्ट-शर्ट
गीता प्रेस रोड, गोरखपुर
3 प्रो. मो. सुलेमान मंसूरी Mo.: 9936719533

Mo.: 9335131166
मंसूरी शकील भाई
एक्सपोर्ट क्वालिटी
सूजी से बनी हुई स्टेन्डर्ड सेवई
दिलीप सेवई
निर्माता : दिलीप सेवई भण्डार
24 एच, तुलसीपुर, इलाहाबाद
57

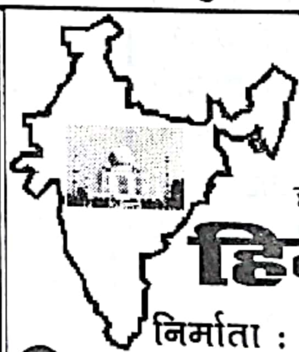
Ph.: 2659059
एक्सपोर्ट क्वालिटी
हर खुशी के मौके पर
हिन्द सेवई
निर्माता : हिन्द सेवई वर्क्स
55 399 /A, तुलसीपुर, इलाहाबाद (उ०प्र०)

धनोरी शरीफ कांफ्रेंस में मंसूरी जनसैलाब

तालीम याफ्ता माँयें बच्चों की होम टीचर बनकर घर में बच्चों को दीन व दुनियावी तालीम दें। मंसूरी बैतुलमाल में अपनी ज़कात और चर्मकुर्बानी का पैसा जमा करें ताकि गरीब बच्चियों की शादी पर खर्च किया जा सके।

जनाब रमज़ान बख्श मंसूरी, चकबन्दी अधिकारी, हरदोई, अवाम को खिताब करते हुए

ललितपुर- धनोरी शरीफ में तीसरा एकरोजा सेमिनार में विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए ऑल इण्डिया जमीयतुल मंसूर सोसाइटी के मुख्य अतिथि जनाब मुख्तार अहमद मंसूरी नें जनाब अनीस मंसूरी का संदेश देते हुए कहा कि कौम की तरक्की के लिए तालीम का होना जरूरी है। सदर जनाब हाजी ज़ियाउद्दीन ठेकेदार व अब्दुल मजीद ठेकेदार ने पुरजोर अपील की कि इस मुकद्दस जगह पर हम अहद करें कि हम अपनी बच्चियों को कम से कम हाईस्कूल या इंटर तक जरूर तालीम दिलायेंगे, ताकि शादी के बाद वे अपने बच्चों की होम टीचर बनकर दीन व दुनियाबी तालीम दे सकें और मुल्क व कौम की तरक्की में अच्छी नीव डालें।

इससे पहले मंसूरी समाज का विशाल काफिला जिला संयोजक अब्दुल हनीफ मंसूरी के संचालन में ललितपुर से धनोरी शरीफ के लिए बसों व कारों द्वारा रवाना हुआ। काफिले के साथ गांव-गांव से रोशन खां महाते, शब्बीर विरधा, हबीब कलबर व मो0 वकील मेहरौनी अपने निजी वाहनों से जुड़ते चले गये, वहीं बुन्देलखण्ड का संचालन चित्रकूट के जनाब सादिक मंसूरी व मऊ के जनाब कल्थू मंसूरी ने किया, तो म0प्र0 बुन्देलखण्ड क्षेत्र से वहीद एडवोकेट बीना, जाहिद ठेकेदार सागर, शमसुद्दीन व सुन्नू महाते टीकमगढ़ ने बागडोर सम्भाली। काफिले का इस्तेकवाल मडावरा में जनाब मुजीब मंसूरी द्वारा किया गया।

कांफ्रेंस जियाउद्दीन की सदारत व मेहमाने खुसूसी मुख्तार मंसूरी की ज़ेरे निगरानी सम्पन्न हुई। मंसूरी कमेटी की तरफ से शहर पेशइमाम अब्दुल अलीम के साथ सभी मंसूरी भाईयों नें मुल्क की तरक्की व अमन की दुआयें मांगी।

मंसूरी समाज की तरक्की के लिए ग़ौरखोज़ किया गया। कांफ्रेंस के निंगरा मुस्तफा खां ठेकेदार नें इज्तिमाई शादियों पर ज़ोर दिया। शाहिद मंसूरी नें ललितपुर में धर्मशाला बनाने पर ज़ोर दिया। ठेकेदार हबीब तालबेट नें धर्मशाला के लिए तन-मन -धन से एक जुट होकर काम करने की बात कही। कानपुर से आये इंजीनियर मुख्तार साहब नें अजीतापुरा धर्मशाला निर्माण का तीनमंज़िला नक्शा पेश किया जो सर्वसम्मति से पास किया गया।

अब्दुल नासिर ठेकेदार (सरपरस्त) ने कौम का गठन तहसील व ब्लाक स्तर पर करने का ज़ोर दिया। हरदोई से आये रमजान बख्श मंसूरी (चकबंदी अधिकारी) नें उच्च शिक्षा प्राप्त बच्चों की हौसला अफजाई करते हुए इनामात दिये। हाजी जुम्मन नें गरीब परिवारों की मदद के लिए मंसूरी बैतुल माल बनाये जाने की सिफारिस की।

कांफ्रेंस की निज़ातम इरशाद मंसूरी मण्डल सदर नें की और ललितपुर जिले व बुन्देलखण्ड से आये मंसूरी समाज के नुमाइन्दों नें समाज की तरक्की के लिए अपने मशवरे रखे। कांफ्रेंस को कामयाब बनाने के लिए इदरीस (स्टेशन मास्टर), फैज़ मंसूरी, समद ठेकेदार, मुशी महाते, जमील महाते, हब्बी महाते, इज़राईल, ग़फ़ूर चकवाले, अल्लादीन, हबीब मेम्बर, नज़र खां, हन्नू महाते, समी ठेकेदार, जाकिर ठेकेदार, शाकिर ठेकेदार, अख्तर, बड़कुल, जमील, यासीन, सिलगन, साबिर, यासीन मास्टर व अजमेरी मंसूरी का खास रोल रहा।

इसहाक मंसूरी
नगरा, झांसी

अवामी बैतुलमाल

बैतुलमाल की ज़रूरत हम उस वक्त सिद्दत से महसूस करते हैं जब परेशानहाल ग़रीब, यतीम, बेबायें, निकाह से महरूम मर्द और औरतें, मुसाफिरखानों के बगैर परेशान मुसाफिर व दीगर जरूरतों के लिए लोग भटकते हैं।

इज्तिमाई निज़ाम-ए-ज़कात को कामयाब बनाने के लिए अपनी ज़कात की रकम को मंसूरी बैतुलमाल में जमा करें, जिसके ज़रिये मुल्की पैमाने पर इज्तिमाई शादियां, बच्चों की तालीम, मुसाफिर खाने की तामीर, इबादत गाह, गरीबों-यतीमों की मदद का निज़ाम बेहतर बनाया जा सके। मंसूरी समाज की गाढ़ी कमाई जो ज़कात के नाम पर जिनके बारे में आपको यह भी पता नहीं होता कि इसका इस्तेमाल कैसे और कोन लोग कर रहे हैं। ज़कात का सबसे पहला हक़ उस जरूरतमंद का है जो जितना ज्यादा क़रीबी है।

जहां तक बैतुलमाल का सवाल है इसकी शुरूआत मरकज़ से ही होना चाहिए। फिलहाल इसकी शुरूआत लखनऊ से की जा रही है, मेरा मानना है कि बेतुलमाल की स्कीम हमागीर होना चाहिए। तमाम सूबों में शाखयें हों और एक दस्तूर मुरत्तब किया जाये जिसमें छोटे-छोटे काम मुकामी तौर पर अंजाम दें लेकिन बड़ा काम मरकज़ के ज़ेरे निगरानी अमल में आये।

अब्बासी दौर में ज़कात का निज़ाम हज़रत उमरबिन अब्दुल अजीज़ के दौर-ए-हुकूमत में मिस्र के गवर्नर नें इन्हें खत लिखा कि सदका व ज़कात की रकम लेने वाला कोई नहीं है, अब इस रकम का क्या करें। उमर बिन अब्दुल अजीज़ ने जवाब दिया गुलामों को खरीद कर आज़ाद करो, बड़े रास्तों पर मुसाफिरों के लिए आरामगाहें तामीर कराओ। उन नौजवान मर्द और औरतों की माली इमदाद करो जिनका निकाह नहीं हुआ है। इबने कशीर रह0 नें

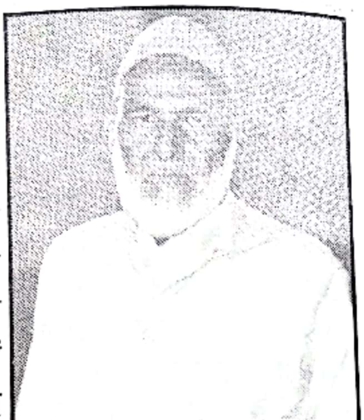

अब्दुल शमी जाफरी
सन्त कबीर नगर (खलीलाबाद)

लिखा है कि खलीफा नें एक शख्स को खुसूसी तौर पर मुकर्रर किया था जो शहर की गलियों में हर रोज यह ऐलान करता था, कहां हैं वे लोग जो निकाह करना चाहते हैं, कहां हैं मोहताज व हाजतमंद और कहां हैं यतीम और बेसहारा ये मामला चलता रहा कि समाज में तमाम लोग मालदार हो गये, गरीबी का नामोनिशान मिट गया।

खुलफाये राशदीन के बाद के दौर में निज़ाम-ए-खिलाफत बदल गया और हुक्काम जुल्म व तसद्दुद पर उतर आये तो बाज़ लोगों का ख्याल हुआ कि ऐसे लोंगों के हाथ ज़कात कैसे दी जाये और इन्हें ज़कात का अमीर कैसे करार दिया जाये। उस वक्त मौजूद साहेबाकराम रज़ी0 नें यही फैसला दिया कि ज़कात उन्हीं को दी जानी चाहिए ये किसी ने नहीं कहा कि खुद अपने तौर पर खर्च कर डालो। हज़रत अब्दुल बिन उमर से एक शख्स ने पूछा अब ज़कात किसे दें कहा वक्त के हाकिमों को, उसने कहा कि वह ज़कात की रकम अपने कपड़ों और इत्र पर खर्च कर डालते हैं फरमाया अगरचे ऐसा करते हो मगर दो उन्हीं को, **क्योंकि ज़कात का मामला बगैर निज़ाम के कामयाब नहीं हो सकता है।**

मुशाहिदा है कि मआसी मजबूरियों में मुबतिला गैरतमंद अफराद किसी के सामने दस्ततलब दराज़ नहीं करते और न ही खुले तौर पर ज़कात व सदका लेना पसंद करते हैं। खुदा के दर के सिवा किसी दूसरे के दर पर हाथ फैलाना उनके लिए मौत से भी बड़ी मुसीबत है, इसलिए मुस्तहकीन की पर्दापोशी के लिए हुक्म हुआ है कि बेहतर यह है कि ज़कात बैतुलमाल में जमा करें। जिन मुल्कों में हुकूमत इस्लामी नहीं हैं वहां मुसलमानों

के लिए ज़रूरी है कि वे किसी अहल मुसलमान को अपना अमीर मुकर्रर कर लें ताकि इस्लामी ज़िन्दगी का निज़ाम क़ायम रहे। मुसलमानों नें ग़लतफहमी अखतियार कर ली कि जिन मुल्कों में इस्लामी हुकूतम नहीं है वहां ज़कात व बैतुलमाल का क़याम नामुमकिन है।

आज जब हम ज़कात के निज़ाम पर गौर करते हैं तो ऐसा महसूस होता है कि हम जिन जिम्मेदारों के पास ज़कात जमा कर रहे हैं वे सब दीन से दूर अपने बनाये हुए निज़ाम के चक्कर लगाते हैं। उन्होंने यह समझ लिया है कि ज़कात का देना तो सिर्फ पसमांदा और दस्तकार बिरादरियों का काम है। हमारे ऊपर ज़कात का देना फर्ज नहीं है (जो ज़कात जमा करके ऐश की जिन्दगी गुजार रहे हैं)। उन्होंने बिरादरी कबीलों को दो हिस्सों में बांट दिया अशराफ और रज़ील, अशराफ वे तमाम लोग जो अपनी झूठी शान के लिए अपने नाम के साथ तमाम तखल्लुस लगा रखे हैं, मदरसों और मस्ज़िदों व दीगर इदारों को अपनी जागीर बना रखा है व उनके नाम से ज़कात व इमदाद वसूल कर रहे हैं।

इन हालात में हमें गौर करना होगा कि अपनी ज़कात अवामी बैतुलमाल में ही जमा करें ताकि गरीबों, यतीमों, बेवाओं, तालिबेइल्मों, मुसाफिरखानों , इज्तिमाई शादियां और अवामी मसाइल के तमाम निज़ाम को बदस्तूर जारी रख सकें।

नोट : इज्तिमाई शादियों का एक प्रोग्राम कोंच जिला-जालौन में 4 फरवरी 2009 को मुनक्किद हो रहा है। आप दिल खोलकर मदद करें व अपनी ज़कात, चर्मकुर्बा का पैसा जमा कर सकते हैं।

Mo.: 9839948351

नौशाद मंसूरी

नौशाद मोबाइल वर्ल्ड

सभी प्रकार के रिचार्ज कूपन, मोबाइल व एसेसरीज के विक्रेता

नोट : सभी तरह के मोबाइल की रिपेयरिंग की जाती है।

मुन्ने मियाँ चौराहा, हरदोई

बाकी पेज 10 का

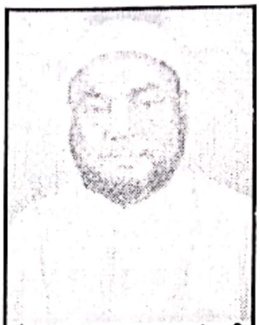

सेठ नसरूल्ला मंसूरी

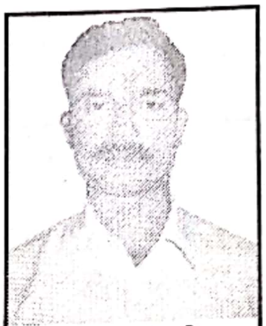

उमर मंसूरी

आप अंदाजा लगायें कि 500 जोड़ों के निकाह पर आम तौर से कितना खर्च होता है। एक जोड़े पर 1 लाख से 20 लाख तक दोनो खानदानों पर खर्च हो जाता है। एक शादी में सिर्फ 2 लाख ही खर्च मान लें तो 500X2 +10 करोड़ खर्च हुआ।

इसके अलावा एक शादी में कम से कम 100100 कुल 200 लोगों को 2 दिन मशरूफियत तो लाजिम है ही, इस तरीके से इज्तिमाई निकाह 500X200X2 कुल 20 लाख दिनों की बचत हुई और अगर एक दिन की मज़दूरी 100 रूपये ही लगाई जाये तो 20 करोड़ रूपये की बचत होती है, अगर हम 1 साल में होने वाली शादियों पर बचत का अंदाजा लगाये और समाज की तरक्की और पसमांदगी पर गौर करें तो क्या नतीजे पर पहुंचते हैं। वक्त और सरमाया आजकी एक अहम जरूरत है। बिरादरी को फिजूलखर्ची से बचाकर तालीम जैसी बुनियादी और तामीरी काम में लगाना हम सब का दीनी और मिल्ली फर्ज है।

प्रोग्राम के जिम्मेदार

ज़ेरे सरपरस्ती- जनाब सलीम मंसूरी उर्फ सल्ले चच्चा, कोंच

जिला सदर- जनाब सेठ जलील मंसूरी, लहरियापुरा, उरई Mo.: 9918810443

शहर सदर- जनाब सेठ नसरूल्ला मंसूरी, कोंच Mo.: 9198012730

शहर महासचिव- जनाब उमर मंसूरी उर्फ लला, कांच Mo.: 9453903265

ज़ेरे निगरानी- मंसूरी समाज, जिला- जालौन

Scanned with OKEN Scanner

वक्त की जरूरत

ईद मिलन समारोह या राहते इंसानियत

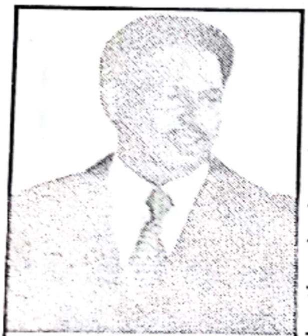

डा0 अख्तर मंसूरी

मधेपुरा बिहार- देर से मिली जानकारी के मुताबिक ईद मिलन समारोह के मौके पर प्रलयकारी बाढ़ का ईद पर असर विषय पर गुफ्तगू, मुकामी रफीक स्वास्थ्य केन्द्र मधेपुरा में मुनक्किद, सदारत का हक अदा किया शहर के मक़बूल व मशहूर डा0 जनाब परवेज़ अख्तर मंसूरी नें।

अवाम को खिताब करते हुए डा0 मंसूरी नें कहा कि ईदुलफितर और ईदुल अज़्हा को अगरचे मज़हबी हैसियत हासिल है लेकिन इसकी समाजी और इक्तिसादी हैसियत से भी इनकार मुमकिन नहीं, इंसान किसी मज़हब किसी फिरके से तालुक रखता हो समाज की एक कड़ी है और सेहतमंद समाज उस वक्त वजूद में आ सकता है जब किसी समाज की जमहूरी बुनियादें मज़बूत हों। जहां इंसान का हमदर्द इंसान हो भाई-चारा अमन व दोस्ती का बोलवाला हो, जहां दिलों में बड़ों की इज्जत और छोटों से प्यार हो, जहां अमीर-गरीब में कोई फर्क न हो ईद का त्योहार जमहूरी कदरों को तकबियत देता है। ईद के दिन हर शख्स अपने तमाम गिले-शिकवे भूल कर अपने और परायों को गले लगाता है व मुबारकबाद पेश करता है।

लेकिन ऐसे हालात में जहां इंसान प्रलयकारी बाढ़ से परेशान, बदहवास, भूखा-नंगा व मजबूर हो और अपनों से बिछुड़ने का ग़म हो, मकान और ज़िन्दगियां, माल-असबाब सभी तबाह व बर्बाद हो गया हो, ऐसे में कैसी ईद की खुशी। ईद इंसानी भलाई का नाम है, इस बाढ़ नें सभी तबके के लोगों को तबाह कर दिया है, साथ ही दशहरे की खुशियों को प्रभावित किया है, जिसमें दोनों धर्मो के लोगों की खुशियां छिन गई है। ऐसी मुसीबत की घड़ी में हम सब को हिम्मत और सब्र से काम लेने की जरूरत है, साथ ही परेशानहाल समाज में मोहब्बतो हमदर्दी बहुत जरूरी है।

इस मौके पर हमें एक दूसरे की मदद के लिए आगे आना होगा तभी हमारे त्योहार, प्रजातंत्र और धार्मिक खुशिया बरकरार रह सकती हैं। हमारे नबी सल्ल0 एक बार ईद की नमाज़ के लिए जा रहे थे, रास्ते में कुछ बच्चे खुशियां मनाते मिले लेकिन एक बच्चा रंजीदा नज़र आया। आपने उस बच्चे से पूछा आप ईद की खुशियों में संजीदा क्यों है, उसने जवाब दिया कि मेरे मां-बाप और भाई-बहन हमसे जुदा हो गये हैं, मेरे पास घर भी नहीं है, कपड़े भी नहीं है हम ईद कैसे मनायें। उस बच्चे की दास्तान सुनकर आप सल्ल0 की आंखों से आंसू जारी हो गये। आपने फरमाया बच्चे क्या तू इसको पसंद करेगा कि तेरे बाप की जगह मैं सल्ल0 हो जाऊं और तेरी मां की जगह आयशा रजि0 बन जायें और तेरे भाई-बहन फातिमा व हसन हुसैन हों, यह सुनकर बच्चा खुश हो गया। आप सल्ल0 उस यतीम बच्चे को अपने घर ले गये और आयशा रजि0 से फरमाया कि इसको खाना खिलाओ, कपड़े पहनाओ यह यतीम है, इसकी खुशियों में अल्लाह की खुशी छुपी है।

हर इंसान का फर्ज होना चाहिए कि वह सभी परेशान हाल की मदद के लिए हमेशा तैयार रहे। इस गुफ्तगू में सभी राजनैतिक दलों के नेता व बुद्धिजीवियों ने हिस्सा लिया। खास तौर से डा0 अरूण कुमार जी, राजग अध्यक्ष प्रो0 अरविन्द यादव, जद अध्यक्ष प्रो0 विजेन्द्र यादव, कांग्रेस अध्यक्ष प्रो0 सतेन्द्र सिंह यादव, डा0 अशोक कुमार, पारसद विजय कुमार, उप कुलसचिव डा0 अरूण कुमार, भाजपा डा0 जय प्रकाश यादव, अनवारूल हसन, मो0 नसीम व दीगर सैकड़ों लोगों ने हिस्सा लिया। आखिर में डा0 परवेज अख्तर मंसूरी नें इस अवसर पर आये हुए हज़रात का इस्तकबाल किया और आपस में मोहब्बतो-हमदर्दी रखने की अपील की।

फिरोज मंसूरी, बंकीपुर, पटना (बिहार)

मुस्लिम सियासी बेदारी

मुसलमान अपना सियासी सऊर बेदार करके एक नई सिम्त और तरक्की की नई बुलंदियों तक ले जाने के लिए अपना तामीरी व अख़्लाकी किरदार पेश करे। मुसलमानों के मसाइल के साथ-साथ मुल्क को इस वक्त बड़े-बड़े मसाइल और खतरात दर पेश हैं। जब तक मुल्क के मसाइल हल नहीं होंगे मुसलमानों के मसाइल भी हल नहीं होंगे।

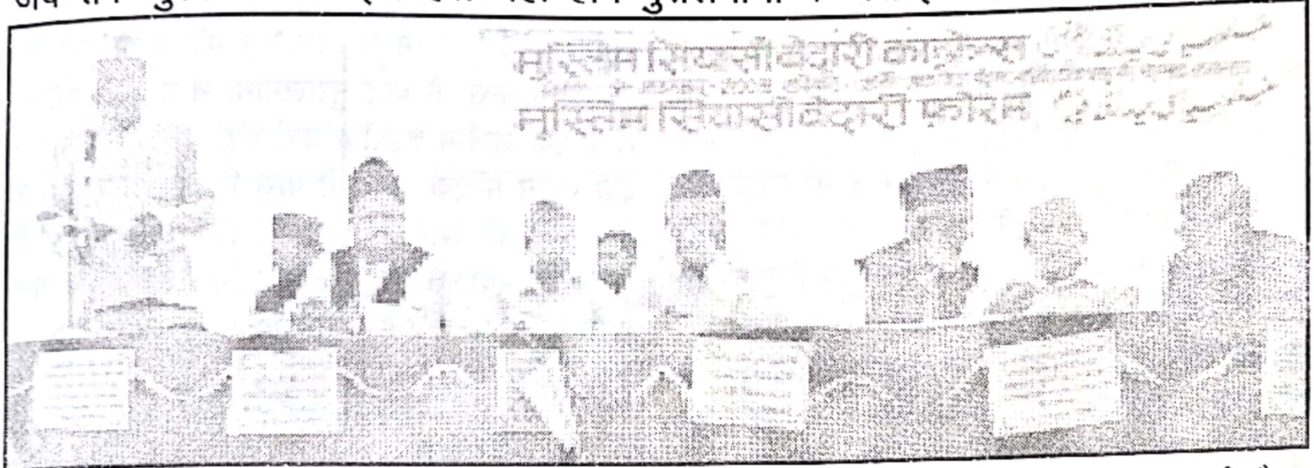

मुसलमानों के लिए जरूरी है कि मुल्क में अदल व इंसाफ के कायम करने के लिए यहां से भ्रष्टाचार के खातमें के लिए व बिगड़ती हुई फिरका वाराना सूरत-ए-हाल की इस्लाह के लिए नेज़ मज़लूमों और कमजोरों की हिमायत में उठ खड़े हों, और इस लिहाज़ से अपनी इस्लामी व इंसानी जिम्मेवारियों को पूरा करें। सूरत-ए-हाल यह है कि मुल्क की सियासत पर वह लोग काबिज़ हो गये हैं, जो बैरूनी साम्राज्य के आलाकार और जुल्म व इंसाफ के अलम बरदार हैं। ऐसी सूरत-ए-हाल में मुसलमानों और दीगर बिरादरा-ए-वतन को चाहिए कि मुल्क में अमन व इंसाफ के कयाम व बका की खातिर अपना दीनी किरदार पेश करें।

अस्र हाजिर को तरक्की याफ्ता दौर कहा जाता है। लेकिन आज का इंसान भयानक मसाइल से दो-चार है। दुनिया के हर खित्ते में मासूम इंसानों का इस्तेसाल और इनका कत्ल नाहक आमतौर पर जारी है। सरमायादार और हुकमरां ताकतें मासूम इंसानों को गुलाम बना कर और इनके इलाकों पर कब्ज़ा करके कुदरती वसाइल को लूट रहे हैं। अपने गलत मकासिद के तहत वह अपनी साजिशों को मक्र व फरेब और जबरो-तसल्लुत पसंदी के ज़रिए अंजाम देने की कोशिश कर रहे हैं ऐसे हालात में आम इंसानों पर गोया तमाशबीनी की कैफियत तारी है।

हिन्दुएस्तान में बरतानवी दौरे हुकूमत में बेशुमार इंसनों का कत्ल-ए-आम हुआ। इनकी जायदातों को जब्त किया गया और इनकी इबादतगाहों को तोड़ा गया। बर्तानवी जुल्मो-तसद्दुद का पहला निशाना मुसलमान और बिल खुसूस उलेमा थे। इसकी वजह यह थी कि इस्लाम पसंद उलेमाओं नें सबसे पहले बर्तानवी हुकूमत को चेलेंज किया और कुरआन व सुन्नत की रोशनी में इन्होंने वजाहत की कि वर्तानवी हुकूमत की मुखालफत इनकी एक अहम जिम्मेदारी है। चुनांचे एक तहरीक बरपा हुई। तहरीक आज़ाद हिन्द में मुसलमानों ने और बिल खुसूस इस्लाम पसंद उलेमाओं ने बेलोस और बेमिसाल कुर्बानियों के ज़रिये लाजवाब जद्दोजेहद के तसलसल को हमेशा ही बरकरार रखा ताकि हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तानियों को आज़ादी और तहफ्फुस फराहम हो सके। तहरीक शाहेदीन, तहरीक रेशमी रूमाल, तहरीक तर्क मवालात, तहरीक खिलाफत, तहरीक खाकसार, जमीयतुल उलेमा, मोपला तहरीक, जमाअत-ए-इस्लामी वगैरह। मुख्तलिफ तहरीकेकार इख्तियार करते हुए इंसानों को इंसान की गुलामी से निजात दिलाने की जद्दो-जेहद के नसबुल ऐन के तहत सरगर्म हुई। मुसलमानों ने इस मकसद के लिए कांग्रेस और

Scanned with OKEN Scanner

मुस्लिम लीग को भी ताऊन किया। तहरीक-ए- आजादी हिन्द के दौरान इन तहरीकों ने हिन्दुस्तानी सियासत को इस बात के लिए तवज्जो दिलाई कि हुकमरां से आजादी हमारा निशाना है और इस मकसद के लिए जरूरी है कि तमाम हिन्दुस्तानी एक होकर साम्राज्य की मुखालिफत करें, जबकि बर्तानवी तसल्लुत की एक पॉलिसी लड़ाओ और हुकूमत करो की थी।

बर्तानवी साम्राज्य के खिलाफ जद्दो जेहद के लिए इन तहरीकों ने अपने नज़रियात कुरआन व सुन्नत से ही लिए थे। गैर मुस्लिम अवाम और दानिशवरों व रहनुमाओं ने भी इन उसूलों को पसंदीदगी और कुबूलियत की नज़र से देखा। तहरीक-ए-खिलाफत में गांधी जी की सहूलियत इसकी वाजेह मिसाल है।

अपने खराब इरादों के तहत फिरका परस्त व फसताई साज़िश अनासिर बेरूनी साम्राजी ताकतों से गठजोड़ कर के मुसलमानों के मिल्ली तहाफुज़ को मुसलसल निशाना बनाते रहे और इस तरह के हालात पैदा किये जाते रहे हैं कि मुसलमान एक तरह के एहसास जुर्म और एहसास-ए-खौफ के तहत जिन्दगी गुजारने पर मजबूर हैं।

तकसीम मुल्क का इल्जाम मुसलमानों के सर रखा गया। हालांकि हकीकतें सामने आती जा रहीं हैं कि किसकी जिम्मेदारी मुसलमानों के बरखलाफ दूसरों पर है जो एक साजिसी मंसूबे पर अमल कर रहे थे। बेशुमार मुस्लिम फसादात के ज़रिये मुसलमानों को जुल्म व जब्र का शिकार बनाया गया। 1947 से बेशुमार मुस्लिमकस फसादात का सिलसिला जारी है। कभी किसी इलाके में तो कभी किसी गांव या शहर में ये आग लग जाती है और दस्तूर-ए-हिन्द में अताकर्दा इंसाफ व मसावात के वायदे हुकूमते इंतिज़ामिया की नाकामी के वाइस खोखले साबित होते रहे हैं। आज तक मुस्लिम मुखालिफ फसादात में मुलव्विस अफराद के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं हुई और न ही किसी को सजा दी गयी। मलियाना, हासिमपुरा, बम्बई, मुरादाबाद, भागलपुर और गुजरात के अलावा भी बेशुमार मसाइल हैं। बेशुमार लोग कत्ल हुए और इनकी मिलकियत तबाह व बर्बाद की गयी या लूट ली गयी।

उर्दू को इसके जाइज़ हक से महरूम कर दिया गया। नतीजतन आज मुसलमानों की नई नस्ल अपनी मादरी ज़बान से महरूम कर दी गयी है।

जामऐमिल्लिया इस्लामिया का अकलियती किरदार खत्म कर दिया गया और अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी के अकलियती किरदार पर तलवार लटकती रहती है।

मुस्लि पर्सनल लॉ के खिलाफ इकसा सिविलकोर्ट के नाम पर साज़िसें की जाती रही हैं। साहबानों केस के बाद मुसलमानों नें पर्सनल लॉ के लिए एक अजीम तहरीक बर्पा की, चुनांचे हुकूमत ने इस जमन में एक बिल भी पास किया, लेकिन इसमें इस तरह की खामियां रखी गई कि इसी कानून की रोशनी में अदालतों से मुस्लिम पर्सनल लॉ के खिलाफ फैसले हो रहे हैं। इस तहरीक का नतीजा हमको क्या हासिल हो सका।

सच्चर कमेटी रिपोर्ट की रोशनी में मुसलमानों की हालत-ए-जार का अंदाजा लगाया जा सकता है। समाजी हैसियत में भी इनकी हालत खसता है। इनकी आबादियों में जिन्दगी की बुनियादी जरूरतें कमयाब हैं। नेज़ सरकारी नौकरियों में भी इनकी नुमाइंदगी अफसोसनाक हद तक कम हो गयी हैं।

बाबरी मस्जिद को शहीद करके इसे बुतखाने में तबदील कर दिया गया। वक्फा-वक्फा से मुसलमानों की इबादतगाहों को मुनतनाज़ा बनाया जाता है। इनके शाअर की बेहुर्मती होती है और मुख्तलिफ हवालों से इनके जज़बात को मजरूह किया जाता है और इस तरह मुसलमान एक हैजानी और रद्दोअमल की कैफियत में मुबतिला होते रहते हैं।

दहसतगर्दी के इल्ज़ामात मुसलमानों पर इसलिए आयत किये जा रहे हैं कि वह इस मुल्क की तरक्की में अपना हकीकी किरदार अदा करने से बाज़ रहें और इज्तिमाई तौर पर एहसास-ए-जुर्म और खौफ की कैफियत में मुबतिला हो जायें।

कान्फ्रेंस में यह फैसला लिया गया कि एक कमेटी गठित करके तमाम सियासी मामलात का जाएज़ा लिया जाए और इस क्षेत्र में काम करने वालों के लिए मरहलेवार मंसूबा बनाते हुए निचली सतह से काम को अंजाम देने की कोशिस की जाए।

आफताब मंसूरी

Scanned with OKEN Scanner

मुजाहिद-ए-कौम

मुनीर बख्श मंसूरी

जनाब मुनीर बख्श मंसूरी एक अवामी रहनुमा थे, आपने जिन्दगी में बहुत उतार चढ़ाव देखे कभी कभी तो उन्हें जबरदस्त तूफानों का समना करना पड़ा, लेकिन मुखालिफ हवायें इनके हौसले को परस्त नहीं कर सकीं।

आपकी शख्सियत ज़हन में आते ही एक संगमर्मर का महल उभरता है, बेहद साफ-सुथरा जिस पर अनगिनत आंधियों, तूफानों, बारिशो और लगातार पड़ती धूप का कोई असर नहीं हुआ। जिसकी दीवारें इस इंतिजार में हों कि कोई आये इन पर टिक कर सहारा लेलें और अपने दुख-दर्द की दास्तां सुनाकर अपना जी हलका कर सके। कमजोरों और पिछड़ों को अल्लाह की रस्सी का सहारा देकर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करने में अपनी पूरी जिन्दगी दांव पर लगा दी और 11 नवम्बर 1987 को इस दुनिया-ए-फानी को अलविदा कहा। इन्ना... जिनकी 21वीं वर्षी 11 नवम्बर को मनाई जायेगी।

कौमी रहनुमा की पैदाइश बुन्देलखण्ड के तारीखी शहर जालौन के मोहल्ला पुरानीहाट में जनवरी 1916 में हुई। आपके वालिद जनाब कालेखां मंसूरी साहब का साया बचपन में ही उठ गया जो कपास के एक बड़े व्यापारी थे। वालिद की वफात के बाद तमाम मालोजर अजीज़दारों ने हड़प लिया। आप बेसहारा हो गये, उस वक्त आपकी परवरिश खानदानी चचा जनाब हुसैन बख्श मंसूरी जो बड़े ही रहमदिल इंसान थे के ज़ेरे निगरानी हुई।

खानदानी सिजरा-जनाब मंसूरी साहब के दादा व परदादा ग्वालियर म0प्र0 से आकर जालौन में क़यामपज़ीर हुए। दादा दो भाई थे, बड़े भाई की औलाद में जनाब काले खां मंसूरी अकेले थे। जनाब कालेखां साहब के दो बेटे और एक बेटी थी। बड़े बेटे जनाब मुनीर बख्श मंसूरी और छोटे जनाब पीर बख्श मंसूरी थे।

जनाब मुनीर बख्श मंसूरी के दो बेटिया व चार बेटे जनाब नबी बख्श मंसूरी (सम्पादक मंसूरी पैग़ाम, लखनऊ), मरहूम जनाब मदार बख्श मंसूरी, जालौन, जनाब इसहाक मंसूरी एडवोकेट, कानपुर, और छोटे बेटे जनाब इसराज मंसूरी, जालौन हैं।

तालीमी हालात- वालिद का इंतिकाल हो जाने से आप अच्छी तालीम हासिल न कर सके लेकिन तालीम से आपको बहुत लगाव रहा। आपने बिरादरी के हालात पर गौर किया कि समाज में लोग बच्चों से मज़दूरी कराते हैं, रूई के काम में लगे हुए लोगों की मौत दमां या टी. बी. से जल्द हो जाती है। रूई से उड़ने वाले बारीक रेशे सांस के साथ फेफड़ों में जमा हो जाते है जिससे जवानी में ही धुनिया बूढ़ा हो जाता है और जिन्दगी के बाकी दिन मौत से लड़कर कराह-कराह कर गुज़ारता है, इससे घर में आमदनी के रास्ते बंद हो जाते हैं। इस वजह से बच्चों से मज़दूरी कराना मजबूरी हो जाती है और घर का खर्च चलाना मुश्किल होता है। मंसूरी साहब नें रूई के काम से बच्चों को अलग रखने और उन्हें तालीम दिलाने पर ज़ोर दिया। जनवरी 1941 में तालीमी निज़ाम कायम करने के लिए मोहल्ला चिमनदुबे, जालौन में एक इमारत की संगएबुनियाद रखी, जिसमें इब्तिदाई तालीम का सिलसिला शुरू किया गया जिसे मंसूरियान इमामबाढ़ा के नाम से जाना जाता है। अभी कुछ साल पहले ही पुरानी और कच्ची इमारत ज़मीदोश हो गयी थी। नई चुनी गई तंजीम के सदर जनाब अशरफ मंसूरी बिजली वालों की ज़ेरे निगरानी नये सिरे से तामीर की गई जिससे तालीमी निज़ाम में कोई रूकावट न आये। तालीमी निज़ाम को आगे बढ़ाने के लिए आपने 17 अप्रैल 1943 को मोहल्ला तोपखाने में शहर मुस्लिमीन की एक बैठक बुलाई जिसके ज़रिये एक मदरसा वजूद में आया जिसे आज सूफियान मस्ज़िद के नाम से जाना जाता है। इस इदारे से सैकड़ों बच्चे तालीम हासिल कर रहे हैं।

आपका तालीमी रूझान परवान चढ़ता रहा, इसी तहरीक के तहत इस्लामिया जू.हा. स्कूल मोहल्ला रापटगंज की नींव पड़ी। जिसमें चार बानिये तंजीम में मौलाना जनाब रजीउर्रहमान सिद्दीकी, जनाब अशरफ अली एडवोकेट, जनाब सईदुर्रहमान अंसारी और आपके

बड़े बेटे हाजी नबी मंसूरी को इदारा व स्कूल में खजांची का दर्जा हासिल है। मौजूदा दौर में इदारे में इण्टर तक की तालीम दी जा रही है।

कारोबारी हालात- मंसूरी बिरादरी में तालीम की कमी होने की वजह से लोग अपना आबाई कारोबार रूई की धुनाई पर ही कनात करते रहे, जो साल के तीन माह ही चलता है। बाकी 9 माह मजदूरी के लिए दर-दर भटकना पड़ता है। तालीम की कमी और असंगठित रोजगार होने की वजह से सरकारी अफसरान और दबंग लोग धुनकरों को घर बुलाकर बेगार लिया करते थे और काम के बदले पूरी मजदूरी भी नहीं दिया करते थे। आपने बेगार के खिलाफ आवाज़ बुलंद की।

जितना काम, उतनी मज़दूरी- 23 अक्टूबर 1939 को तमाम मंसूरी समाज को इकट्ठा किया और संगठन की बुनियाद के साथ ही कारोबार में "जितना काम, उतनी मज़दूरी" का नारा दिया। किसी के घर जाने व बेगार करने के लिए बिरादरी को रोका और मजदूरी के रेट तय किये, जिसके नतीजे में हुकमराना और असमाजिक लोगों के जुल्म के शिकार हुए। बेबुनियाद इल्ज़ाम लगाकर जेल भेज दिया गया।

सामाजिक हालात- तालीम की कमी, गुर्बत और दीन से दूरी होने की वजह से औरतों व बच्चों से काम लिया जाता था। औरतों से मज़दूरी, बेपर्दगी और बाज़ारों में निकलना आम बात थी, ये गैर इस्लामी तौर-तरीके आपको बिल्कुल पसंद नहीं थे। इस बुराई के खिलाफ एक आवाज दी, इस आवाज पर लब्बैक की सदा बुलंद करने वालों में जनाब शेख सुबराती मंसूरी, जुम्मन मंसूरी, गढ़ू चौधरी, हाफिज़ मो० शकूर मंसूरी और आपके छोटे भाई पीर बख्श मंसूरी नें बैठक में हिस्सा लेकर मंसूरी साहब की रहबरी में तय किया कि बाजार में मस्तूरात मज़दूरी के लिए नहीं जायेंगी, अगर काम ही करना है तो घरों में काम करें, अगर बाहर निकलना ही पड़े तो पर्दे का खास ख्याल रखा जाये और बच्चों से मजदूरी कराने पर पूरी पावंदी लगा दी गयी।

दावतों पर पावंदी- मंसूरी समाज का दावतों से बड़ा पुराना लगाव है, एक बुलाव अनेक पहुँचते हैं और आज भी वैसा ही रवैया है। अगर खाने की दावत हो तो भीड़ इतनी नज़र आयेगी जिसका अंदाज़ा मेज़बान को नहीं था, और अगर यही दावत समाजी फर्ज अंजाम के लिए बुलाई जाये तो ढूंढे से बड़ी मुश्किल में उंगलियों पर गिने जाने वाले लोग नज़र आयेंगे। मुजाहिदे कौम जनाब मंसूरी साहब ने दावतों पर पावंदी लगाई कि मेज़बान अपनी हैसियत से बिरादरी में हर घर से सिर्फ एक फर्द को ही दावत देगा पूरे कबीले की दावत पर रोक लगा दी गयी।

सियासी हालात- मंसूरी समाज के सियासी कमोबेश आज जेसे ही हालात थे, राजनैतिक पार्टियां वोट व सपोर्ट तो ले लेतीं थीं लेकिन ऐवान तक इनकी आवाज नहीं पहुंच पाती थी। क्योंकि तालीमयाफ्ता व नौकरपेशा तबका अपने को छिपाकर रखता था कि कोई हमें मंसूरी न समझ ले इसलिए छुपने-छुपाने की यह बीमारी सियासत के गलियारों में भी आ गई। आज तक सियासत में चुने जाने वाले किसी नेता नें अपने को मंसूरी की पहचान एवान में नहीं होने दी। अगर कभी बिरादरी की बात आई तो कहा गया कि यह बातें घर पर की जायेंगे। मंसूरी साहब ने इन बातों का विरोध किया, लेकिन नक्कारखाने में तूती की आवाज कहां सुनाई देती है अपनी आवाज़ को बुलंद करने के लिए एक माहनामा अखबार मंसूरी पैग़ाम की शुरूआत की, जो आज आपके साथ में है।

आजादी के बाद भी बिरादरी में कोई बड़ा सियासी फर्क नज़र नहीं आया, जबकि प्रजातंत्र में सर गिने जाते हैं हम सर गिनाने में भी नाकामयाब रहे क्योंकि समाज के अलग-अलग बहुत से ग्रुप बने हुए हैं। उस वक्त इज्तिमाईयत और संगठन की बहुत कमी थी, लोग मुखतलिफ पार्टियों में बंटे हुऐ थो और वोट देना ही सिर्फ अपना हक समझते थे। मुजाहिदे कौम लोहिया विचारधारा के मानने वाले थे, जुल्म और अधिकारों की बात जब आपने उठाई तो अपने ही लोग विरोधी हो गये और सियासत के ठेकेदारों असमाजिक अफराद से जा मिले, इसका नतीजा यह निकला कि रात में आपके मकान को नज़रआतिश कर दिया गया, जिससे घर का एक हिस्सा जल कर खाक हो गया।

7 नवम्बर 1987 को अपने छोटे बेटे मंसूरी इसराज व पोती शाहीन के निकाह व रूखसती के बाद 11 नवम्बर को फज़िर के बाद हरकतेकल्ब रूक जाने से आपकी रूह परवाज़ कर गई। इस मौके पर किसी शायर ने कहा है-

खुदा देता है जिनको खुशियाँ, उनको ग़म भी होते हैं।
जहाँ बजते हैं नक्कारे, वहाँ मातम भी होते हैं।

सिराज मंसूरी (लालू)
उरई, जिला- जालौन

नाम छोटे लिखें

ताकि कबीले की पहचान के साथ आपको भी पुकारा जा सके।

जैसे- नबी मंसूरी, अशरफ मंसूरी, आफताब मंसूरी, अनीस मंसूरी व मंसूरी जमाल

Scanned with OKEN Scanner

जिला रामपुर (खानपुर) में अनीस मन्सूरी का इस्तकबाल करते हुए हजरात

आवाम को खिताब करते हुए जनाब अन्जुम अली मन्सूरी एडवोकेट

Scanned with OKEN Scanner

मध्य प्रदेश धिमौरा शरीफ में मन्सूरी समाज को खिताब करते हुए जनाब मुख्तार मन्सूरी, प्रदेश सचिव

जिला बिजनौर में मन्सूरी समाज का जिला सम्मलेन का एक दृश्य

जिला जे०पी० नगर में जनाब अनीस मन्सूरी प्रदेश अध्यक्ष का इस्तकबाल

इस्लामी सभ्यता

इस्लामी तहज़ीब के मुख्य तीन सिद्धान्त हैं-
1- इंसाफ, 2- बराबरी, 3- भाईचारगी
जिसपर ये बुलंद इमारत कायम है।

प्रेमचन्द

हिन्दू और मुसलमान दोनों 1,000 वर्षों से हिन्दुस्तान में रहते चले आते हैं, लेकिन अभी तक एक दूसरे को समझ नहीं सके। हिन्दू के लिए मुसलमान एक रहस्य है, मुसलमानों के लिए हिन्दू एक मुअम्मा। न हिन्दू को इतनी फुरसत है कि इस्लाम के तत्वों की छानबीन करें, न मुसलमान को इतना अवकाश कि हिन्दू-धर्म-तत्वों के सागर में गोते लगाए, दोनों एक दूसरे में बेसिर-पैर की बातों की कल्पना करके माथा फुटौवल करने पर आमादा रहते हैं। हिन्दू समझता है दुनिया भर की बुराइयाँ मुसलमानों में भरी हुई हैं, इनमें न दया है, न धर्म, न सदाचार, न संयम। मुसलमान समझता है हिन्दू पत्थरों को पूजने वाला, गरदन में धागे डालनेवाला, माथा रंगनेवाला और दाल-भात खाने वाला पशु है। दोनों एक दूसरे के साये से बचते हैं और दोनों दलों में जो बड़े से बड़े धर्माचार्य हैं वह इस भेदभाव में सबसे आगे हैं, मानों द्वेष और विरोध ही धर्म का प्रधान लक्षण है। हम इस समय हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य पर कुछ नहीं कहना चाहते। मौलाना शौकत अली के साथ हमारा भी यह विश्वास है कि दशा अस्थायी है और वह समय दूर नहीं है जब हिन्दू और मुसलमान दोनों अपनी ग़लती पर पछताएंगे, और अगर मनुष्यता और सज्जनता से प्रेरित होकर नहीं तो आत्मरक्षा के लिए संयुक्त होना आवश्यक समझेंगे। हम इस समय केवल यह देखना चाहते हैं कि हिन्दुओं की मुसलमानों की सभ्यता के विषय में जो धारणा है वह कहां तक न्याय है।

सभ्यता के तीन आदर्श- पुराने ज़मानें में किसी जाति की धर्म-परायणता और उपकार-वृत्ति ही उसकी सभ्यता की द्योतक थी। सेवा और त्याग ही सभ्यता का मुख्य अंग था। चीन, जापान, भारत, मिश्र किसी देश की प्राचीन सभ्यता को लीजिए आप उसे धर्म प्रधान पावेंगे। यद्यपि अब भी वही आदर्श सर्वोपरि हैं पर उसमें परिस्थितियों नें थोड़ा सा परिवर्तन कर दिया है, या यूँ कहिए कि उसका रूपांतर कर दिया है। फ्रांस की राज्य क्रांति ने सभ्यता का जो आदर्श स्थापित किया वह न्याय, भ्रातृभाव और समता, इन तीन स्तंभों पर आधारित है। ज़रा गौर से देखिए जो नवीन और प्राचीन आदर्शों में कोई विशेष अंतर नहीं रह जाता। लेकिन हम नई सभ्यता की जाँच कर रहे हैं, इसलिए नए मापयंत्रों का व्यवहार करना ही उपयुक्त होगा।

न्याय- सबसे पहले न्याय को लीजिए। जहां तक हम जानते हैं कि किसी धर्म ने न्याय को इतनी महानता नहीं दी जितनी इस्लाम धर्म में दया प्रधान है। दया में छोटे-बड़े, ऊंच-नीच, सबल'निर्बल का भाव छिपा रहता है। जहां न्याय होगा वहां ये भेद हो ही नहीं सकते और वहां दया का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता। कम से कम मनुष्यों के लिए नहीं। अन्य जीवधारियों ही पर उसका व्यवहार हो सकता है। हिन्दू धर्म अहिंसा प्रधान है और तह तक जाइए तो न्याय और अहिंसा दोनों एक ही वस्तु हैं। अहिंसा के बग़ैर न्याय की, और न्याय के बगैर अहिंसा की कल्पना नहीं की जा सकती। हम यह मानते हैं कि मुसलमानों ने बड़े-बड़े अन्याय किए हैं। धर्म के नाम पर न्याय को खूब पैरों से कुचला है, पर क्या हिन्दुओं ने अहिंसावादी होते हुए हिंसा के झंडे नहीं गाड़ दिए, यहां तक कि बौद्ध और जैन राजाओं ने अहिंसा को धर्म का मुख्य लक्षण मानते हुए धर्म के नाम पर खून की नदियाँ नहीं बहाईं? किसी धर्म की श्रेष्ठता व्यक्तियों के कृत्यों से न जांचनी चाहिए, यह देखना चाहिए कि धर्म के आचार्य और स्थापक ने क्या उपदेश किया है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने धर्मोपदेशकों को इस्लाम का प्रचार करने के लिए देश-देशांतरों में भेजते हुए यह उपदेश दिया था- जब तुमसे लोग पूछें कि स्वर्ग की कुंजी क्या है तो कहना कि वह ईश्वर की भक्ति और सत्कार्य में है। अराफ़ात के पहाड़ पर

हज़रत (मुहम्मद) के मुख से जिस वचनामृत की वर्षा हुई थी वह अनंत काल तक इस्लामी जीवन के लिए संजीवनी का काम करती रहेगी और उस उपदेश का सार क्या था? न्याय, उसके एक-एक शब्द से न्याय की ध्वनि निकल रही है। आपने फ़रमाया- ''ऐ मोमिनों, मेरी बातें सुनो और उन्हें समझो। तुम्हें मालूम हो कि सब मुसलमान आपस में भाई-भाई हैं। तुम्हारा एक ही भ्रातृ-मंडल है। एक भाई की चीज़ दूसरे भाई पर कभी हलाल (वैध) नहीं हो सकती, जब तक वह खुशी से न दे दी जाए, बेइंसाफी कभी मत करो इससे हमेशा बचते रहो।''

इस अमर वाणी में इस्लाम की आत्मा छिपी हुई है। इस्लाम की बुनियाद न्याय पर रखी गई है। वहां राजा और रंक, अमीर और ग़रीब, बादशाह और फ़कीर के लिए केवल एक न्याय है। किसी के साथ रियायत नहीं किसी का पक्षपात नहीं। ऐसी सैकड़ों रिवायतें पेश की जा सकती हैं जहां बेकसों ने बड़े-बड़े बलशाली अधिकारियों के मुक़ाबले में न्याय के बल से विजय पाई है। ऐसी मिसालों की भी कमी नही है जहाँ बादशाहों ने अपने राजकुमार, अपनी बेग़म, यहां तक कि स्वयं को, न्याय की वेदी पर होम कर दिया है। संसार की किसी सभ्य से सभ्य जाति की न्याय-नीति की इस्लामी न्याय-नीति से तुलना कीजिए, आप इस्लाम का पल्ला झुकता हुआ पाएँगे। अधोपतन होने पर सभी जातियों के आदर्श भ्रष्ट हो जाते हैं। इसमें हिन्दू, मुसलमान, इसाई किसी की क़ैद नहीं। आज हम मुसलमानों को तअस्सुब से भरा हुआ पाते हैं। लेकिन जिन दिनों इस्लाम का झंडा कटक से लेकर डैन्युष तक और तुर्किस्तान से लेकर स्पेन तक फ़हराता था, मुसलमान बादशाहों की धार्मिक उदारता इतिहास में अपना सानी नहीं रखती थी। बड़े से बड़े राज्यपदों पर ग़ैर-मुस्लिमों को नियुक्त करना तो साधारण बात थी, महाविद्यालयों के कुलपति तक इसाई और यहूदी होते थे। इस पद के लिए केवल योग्यता और विद्वत्ता की शर्त थी, धर्म से कोई संबंध न था। प्रत्येक विद्यालय के द्वार पर ये शब्द खुदे होते थे- पृथ्वी का आधार केवल चार वस्तुएं हैं : बुद्धिमानों की विद्वत्ता, सज्जनों की ईश-प्रार्थना, वीरों का पराक्रम और शक्तिशालियों की न्यायशीलता।

समता- अब सभ्यता के दूसरे अंग को लीजिए। यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि इस विषय में इस्लाम ने सभी अन्य सभ्यताओं को बहुत पीछे छोड़ दिया है। वे सिद्धांत जिनका श्रेय अब कार्ल मार्क्स और रूसो को दिया जा रहा है, वास्तव में अरब के मरूस्थल में प्रसूत हुए थे और उनका जन्मदाता अरब का वह उम्मी था जिसका नाम मुहम्मद (सल्ल0)। मुहम्मद (सल्ल0) के सिवा संसार में और कौन धर्म-प्रणेता हुआ है जिसने खुदा के सिवा किसी मनुष्य के सामने सिर झुकाना गुनाह ठहराया हो? मुहम्मद (सल्ल0) के बनाए हुए समाज में बादशाह का स्थान ही नहीं था। शासन का काम करने के लिए केवल एक खलीफा की व्यवस्था कर दी गई थी जिसे जाति के कुछ प्रतिष्ठित लोग चुन लें। इस नियम से उन्होंने अपने आपको भी मुस्तसना नहीं किया, और हार्दिक इच्छा रहते हुए भी अपने चचेरे भाई और दामाद हज़रत अली को खलीफा नहीं बनाया, हालांकि उनका दबाव इतना था कि केवल एक संकेत से (हज़रत) अली का निर्वाचन हो सकता था और इस चुने हुए खलीफा के लिए कोई वज़ीफा, कोई वेतन, कोई जागीर, कोई रियायत न थी। यह पद केवल सम्मान का था। अपनी जीविका के लिए खलीफा को भी दूसरों की भाँति मेहनत मज़दूरी करनी पड़ती थी। ऐसे-ऐसे महान पुरूष जो एक बड़े साम्राज्य का संचालन करते थे, जिसके सामने बड़े'बड़े बादशाह अदब से सिर झुकाते थे, जिनके एक इशारे पर बादशाहतें बनती-बिगड़ती थीं, जूते सी कर या क़लमी किताबें नक़ल करके, या लड़कों को पढ़ाकर अपनी जीविका अर्जन करते थे। हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) ने खुद कभी पेशवाई का दावा नहीं किया। ख़ज़ाने में उनका हिस्सा भी वही था जो एक मामूली सिपाही का। उन्हें कभी-कभी मेहमानों के आने के कारण बड़ा कष्ट उठाना पड़ता था, फ़ाके करने पड़ जाते थे, घर की चीज़ें बेच डालनी पड़ती थीं, पर क्या मजाल कि अपना हिस्सा बढ़ाने का ख्याल भी दिल में आए और संप्रदायों में गुरू-प्रथा ने जितने अनर्थ किए हैं उनसे इतिहास काला हो गया है। इसाई धर्म में पादरियों के सिवा और किसी को इंजील पढ़ने की आज़ादी न थी। हिन्दू-समाज ने भी शूद्रों की रचना करके अपने सिर कलंक का टीका लगा लिया। पर इस्लाम पर इसका धब्बा तक नहीं। गुलामी की प्रथा तो उस वक्त समस्त संसार में थी, लेकिन इस्लाम ने गुलामों के साथ जितना अच्छा सलूक किया उस पर उसे गर्व हो सकता है। इस्लाम

Abdul Muyeej Mansoori
King
MILK & ELAICHI RUSK
A.W. BAKERS
Bara Bazar, Bareilly

Scanned with OKEN Scanner

क़बूल करते ही गुलाम आज़ाद हो जाता था। यहाँ तक कि ऐसे गुलामों की कमी नही है जो अपने मालिक के बाद उसकी गद्दी पर बैठे और उसकी लड़की से विवाह किया। और किस समाज ने नीचों के साथ यह उदारता दिखाई है। कोमल वर्ग के साथ तो इस्लाम ने जो सलूक किए हैं उनके देखते अन्य समाजों का व्यवहार पाशविक जान पड़ता है। किस समाज में स्त्रियों का जायदाद पर इतना हक़ माना गया है जितना इस्लाम में? यूँ बुद्धि और धन की असमता हमेशा रही है और हमेशा रहेगी, लेकिन इस्लाम ने समाज के किसी अंग के पैरों में बेड़ी नहीं डाली। वहां प्रत्येक व्यक्ति उतनी मानसिक और सामाजिक उन्नति कर सकता है जितनी उसमें सामर्थ्य हो। उसके मार्ग में कोई कंटक, कोई बाधा नहीं। हमारे विचार में वही सभ्यता श्रेष्ठ होने का दावा कर सकती है जो व्यक्ति को अधिक से अधिक उठने का अवसर दे। इस लिहाज़ से भी इस्लामी सभ्यता को कोई दूषित नहीं ठहरा सकता।

भ्रातृभाव- अब सभ्यता का तीसरा अंग लीजिए। इस विषय में भी इस्लाम किसी अन्य जाति के पीछे नहीं है। हज़रत ने फ़रमाया- कोई मनुष्य उस वक्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक वह अपने भाई-बंदों के लिए भी वही न चाहे जो वह अपने लिए चाहता है। एक दूसरी जगह आपने फ़रमाया है- जो प्राणी दूसरों का उपकार नहीं करता, खुदा उससे खुश नहीं होता। उनका यह क़ौल सोने के अक्षरों में लिखे जाने योग्य है- "ईश्वर की समस्त सृष्टि उसका परिवार है और वही प्राणी ईश्वर का भक्त है जो खुदा के बंदों के साथ नेकी करता है।" किसी मोमिन ने एक बार आपसे पूछा था- खुदा की बंदगी कैसे की जाए? आपने जवाब दिया- अगर तुम्हें खुदा की बंदगी करनी है तो पहले उसके बंदों से मुहब्बत करो। इन शिक्षाओं से यह बात भली-भांति विदित हो जाती है कि इस्लाम के नियामक ने भ्रातृ भाव का महत्व अन्य जातियों से कम नहीं समझा।

बाकी अगले अंक में...

Iqbal Mansoori Ph.: 0551-2332430, 9415210740

New Bharat Light House

4 Rati Chouk, Gorakhpur-5

बसपा के लिए अब

दिल्ली दूर नहीं

अनीस मन्सूरी

उत्तर प्रदेश में पूर्ण बहुमत सरकार बनाने के बाद जिस प्रकार से बहुजन समाज पार्टी का अन्य राज्यों में जनाधार बढ़ा है, उससे कांग्रेस व भाजपा जैसी राष्ट्रीय पार्टियों में हताशा बढ़ी है। बसपा के निरतंर बढ़ते जनाधार से यह बात तय है कि मुख्यमंत्री बहन सुश्री मायावती के प्रधानमंत्री बनेंगी और वह भी पूर्ण बहुमत के साथ। हाल में हुए चुनाव में कांग्रेस व भाजपा दोनों पार्टियों ने अपने 'गुप्त पैक्ट' के तहत बसपा की जबरदस्त घेराबंदी की थी। कांग्रेस पार्टी ने मुस्लिम वोट बैंक बसपा की झोली में जाते देख अपने गुप्त एजेन्डे के तहत मुस्लिम बहुल क्षेत्रों प्रचार करना आरम्भ कर दिया कि अगर मुसलमान बसपा को वोट देंगे तो निश्चित रूप से भाजपा की सरकार बन जाएगी और साम्प्रदायिक ताकतों का बोलबाला हो जाएगा। ऐसा करने के पीछे कांग्रेस का मकसद 'इन डायरेक्टली' भाजपा को फायदा पहुंचाना था। उधर भाजपा ने भी अपना पुराना हिन्दुत्व का कार्ड खेलकर हिन्दु वोट को इक्ट्ठा करने की कोशिश की। हालांकि दोनों पार्टियों को अपने इस प्रयास में मुंह की खानी पड़ी। चुनाव परिणाम में बेतहाशा बढ़ा जनाधार इस बात का प्रमाण है कि अब मुसलमान कांग्रेस के मुगालते और भाजपा के खौफ में आने वाला नहीं है। मुसलमान अब यह बात अच्छी तरह से समझ चुका है कि कांग्रेस अगर सांपनाथ है तो भाजपा नागनाथ है।

देश में मुसलमानों की खस्ताहाली के लिए मुसलमान स्वयं जिम्मेदार है या फिर इस देश पर 61 वर्षो तक लगातार राज करने वाली कांग्रेस पार्टी और बीजेपी तथा इनकी सहयोगी पार्टियां कसूरवार हैं। मुसलमानों की बदहाली की सबसे बड़ी जिम्मेदार कांग्रेस पार्टी है। यह बात सत्य है कि मुसलमान काफी लम्बे समय तक कांग्रेस पार्टी से जुड़ा रहा है, लेकिन कांग्रेस ने मुसलमानों को सिर्फ अपना 'वोट बैंक' समझा। देश की आजादी से लेकर आज तक एक लम्बा अरसा गुजर जाने के बाद भी कांग्रेस पार्टी ने मुसलमानों के उत्थान व विकास तथा जानमाल की हिफाजत के लिए ईमानदारी से कोई प्रयास नहीं किया। सच्चर कमेटी की रिपोर्ट इसका प्रमाण है।

अवसरवादिता के लिए मशहूर कांग्रेस पार्टी ने अल्पसंख्यकों को अपना वोट बैंक ही समझा। मात्र यही कारण है कि कहीं कांग्रेस पार्टी खुद सामने आकर और कहीं अन्दरूनी आपसी मिली-भगत से बीजेपी व अन्य पार्टियों को आगे करके समय-समय पर साम्प्रदायिक दंगे भड़काकर मुसलमानों के जहन में दहशत व डर भरती रही। अपनी सोंच के तहत कांग्रेस पार्टी ने अयोध्या में बाबरी मस्जिद का ताला खुलवाया था और 1992 में केन्द्र में कांग्रेस पार्टी के शासन में बाबरी मस्जिद को शहीद किया गया। इसके परिणाम में पूरे देश में दंगे हुए जिससे मुसलमानों के दिलों में दहशत व डर भर गया, जो आज तक कायम है। कांग्रेस पार्टी ने ऐसा सिर्फ भाजपा की सरकार बनवाने के लिए किया था।

विधान सभा चुनाव परिणामों से कांग्रेस सहित सभी पार्टियों को अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि बसपा के लिए अब 'दिल्ली दूर नहीं' है। इन चुनाव परिणामों ने बसपा कार्यकर्ताओं में जोश भर दिया है। यही नहीं पार्टी की मुखिया मुख्यमंत्री बहन सुश्री मायावती भी चुनावी नतीजों से पूरी तरह से संतुष्ट हैं। सुश्री मायावती ने अपने बयान में कहा कि पिछले चुनाव की तुलना में इस बार बसपा का मत प्रतिशत के साथ-साथ सीटे भी बढ़ी हैं। दिल्ली, मध्यप्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में पार्टी का मत प्रतिशत बढ़ा है। यही नहीं सीटों में भी इजाफा हुआ है। इन चुनाव परिणामों का लाभ भरपूर लाभ निश्चित रूप से शीघ्र ही होने वाले

Scanned with OKEN Scanner

लोकसभा चुनाव में पार्टी को मिलेगा।

कांग्रेस ने चारों राज्यों में चुनाव के दौरान यह भी कहा कि बसपा को अगर वोट दिया तो इसका सीधा लाभ भाजपा को मिलेगा और भाजपा ने भी इसी ढ़ग का प्रचार कर बसपा के साथ जुड़ने वाले मतदाताओं को भ्रम की स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया। इससे बावजूद मुसलमानों ने खुलकर बसपा का साथ दिया और कई सीटों पर पार्टी को जीत भी मिली। विधानसभा के चुनाव परिणामों के जरिये मतदाताओं ने यह बात साफ कर दी है कि अब उसे गठबंधन की सरकारें मंजूर नहीं है। उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव में बहुजन समाजपार्टी को जनादेश देकर जनता ने जो शुरुआत की थी वह अब अन्य प्रदेशों में भी जारी है। जनता में न तो मंहगाई को मुद्दा माना न आतंकवाद को। चुनाव परिणाम बताते हैं कि देश की जनता यह बात अच्छी तरह से समझ चुकी है कि जब तक स्थायी सरकार नहीं होगी, सत्ता के सामने मजबूरी में फैसले लेने की दिक्कत रहेगी। ऐसे में न मंहगाई से निपटा जा सकेगा और न ही आतंकवाद से। लोकसभा चुनाव से ठीक पहले हुए चुनाव को सत्ता का सेमीफाइनल माना जा रहा था। जनता ने इस सेमीफाइनल के जरिये काफी हद तक यह बात तय कर दी है कि अब केन्द्र में एक दल बसपा की ही सरकार बनेगी। इन चुनावों के परिणामों ने कांग्रेस पार्टी को यह बता दिया है कि वह 'मायावती के सोशल इंजीनियरिंग फैक्टर' को कमजोर न समझें। हर राज्य में बसपा के वोटों का बढ़ा प्रतिशत बहन मायावती की कुशल सोशल इंजीनियरिंग का ही परिणाम है। बहुजन समाजपार्टी ने कांग्रेस के परम्परागत दलित वोटों पर तो कब्जा कर ही लिया, साथ ही विधानसभाओं अपने प्रतिनिधि भी भेज दिये हैं।

प्रदेश की मुख्यमंत्री बहन सुश्री मायावती ने हाल ही में हुए चुनावों में दिल्ली, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ में भी अपनी विजय के झंडे गाड़ दिये हैं। बसपा के बढ़ते जनाधार ने यह साबित कर दिया है कि आगामी लोकसभा चुनाव में वह बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली है। मुख्यमंत्री मायावती के सोशल इंजीनियरिंग के फार्मूले ने राज्यों में भी न केवल सीटें जीतने बल्कि वोट बैंक बढ़ाने में भी रही। चारों हिन्दी भाषी राज्यों में पार्टी खाता खोलने के साथ ही भाजपा और कांग्रेस के वोट बैंक में सेंध लगायी है। मध्य प्रदेश में बसपा को सात, दिल्ली में दो, छत्तीसगढ़ में दो और राजस्थान में छह सीटें जीतने के साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बढ़ाने में भी सफल रही है। वर्षो जो दलित मतदाता कांग्रेस के साथ रहा करता था, वह इस बार बसपा के साथ नजर आया। यही नहीं उत्तर प्रदेश की तर्ज पर ब्राह्मण, ठाकुर, वैश्य व मुस्लिम भी बसपा के साथ नजर आये। मध्य प्रदेश में जहां कांग्रेस के सारे गणित फेल ही गयी वहां बसपा का वोटों में हिस्सा बढ़कर औसतन दस प्रतिशत के आसपास पहुंच गया। इस हिसाब से यह लोकसभा चुनाव के लिए बहुत अच्छा संदेश है।

समाजवादी पार्टी को और खासतौर पर उमाभारती की पार्टी भारतीय जनशक्ति को बसपा ने करारे झटके दिये हैं और चुनाव के पहले तक अच्छी खासी ताकत मानी जा रही गोडवाना गणतंत्र पार्टी अपना जादू नहीं चला सकी। कांग्रेस जो पहले बहुमत के आसपास होने की उम्मीद कर रही थी और उसकी यह भी उम्मीद थी कि वह बसपा या समाजवादी पार्टी या दोनों की मद्द से सरकार बना ही लेगी, अपनी सीटों को पिछली विधान सभा के 39 आकड़े से आगे तो बढ़ा ले गयी, लेकिन ज्यादा आगे नहीं। उसे सबसे ज्यादा नुकसान बसपा ने ही पहुंचाया। जिसने कांग्रेस के सारे बागियों को बुला-बुलाकर टिकट दे दिये थे। छत्तीसगढ़ में बसपा तीन सीटों पर साफतौर पर जीत की हालत में थी और कम से कम पांच सीटों पर उसने कांग्रेस को हरवा दिया। यहां भी अब सभी दलों को बसपा को गम्भीरता से लेना पड़ेगा।

राजस्थान में बहुजन समाज पार्टी ने लोकसभा चुनाव की रिहर्लसल के तौर पर चुनाव लड़ा था, लेकिन उसे अप्रत्याशित और असाधारण

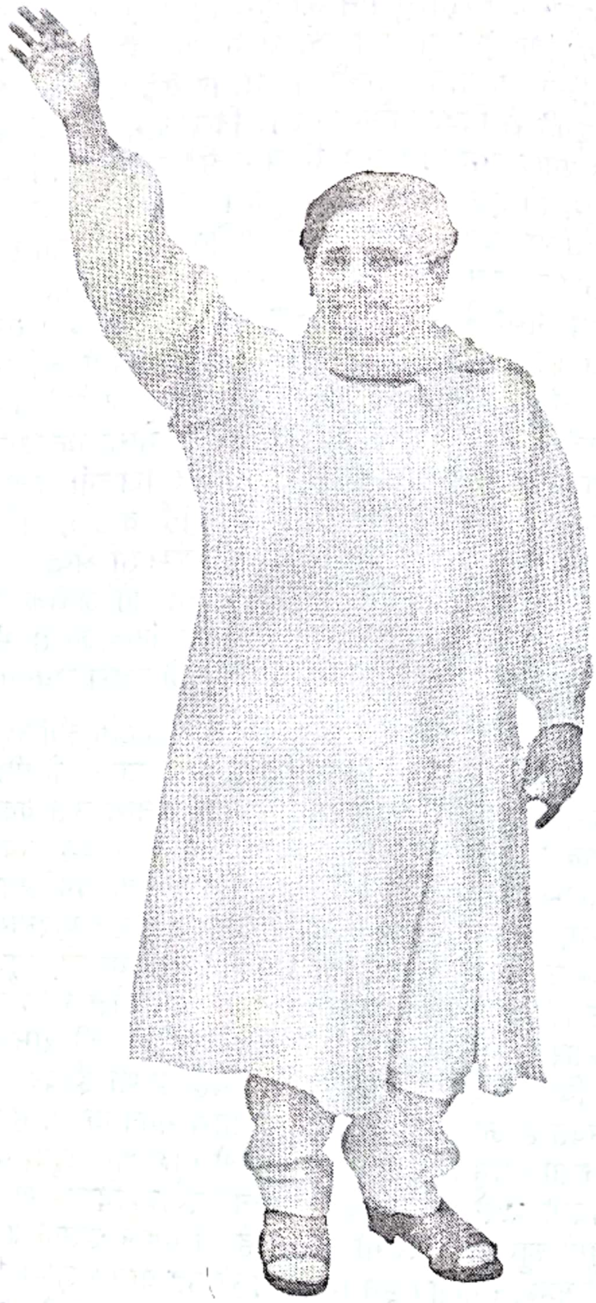

सफलता मिली। कांग्रेस की सरकार अगर राजस्थान में बनना संभव है तो यह बसपा की मद् से होगा और वर्तमान राजनैतिक स्थितियों में यह कैसे संभव होगा यह कोई नहीं समझ पा रहा है। एक समय तो यह लग रहा था कि राजस्थान में भाजपा कांग्रेस से उतनी ही पीछे रहेगी, जितनी बसपा और निर्दलीय विजेताओं की संख्या है, लेकिन बाद में यह समीकरण बदला। मगर इतना नहीं कि भाजपा और कांग्रेस में से कोई भी राहत की सांस ले पाता।

दिल्ली में बहुजन समाजपार्टी तीन सीटों पर विजय की निर्णायक रही। यह इस बात का संकेत है कि अगले लोकसभा के चुनाव में बसपा दिल्ली से पहली बार लोकसभा की कम से कम एक सीट पर दावा पेश कर सकती है और यह सीट पूर्वी दिल्ली या बाहरी दिल्ली हो सकती है। दिल्ली में इन्हीं इलाकों में बसपा ने कांग्रेस को लगभग जीती हुई मानी जा रही सारी सीटों पर करारे झटके दिये हैं।

(लेखक जाने-माने राजनीतिक विशलेषक, आल इंडिया जमीअतुल मंसूर सोसाइटी के सदर व सामाजिक कार्यकर्ता हैं)

Scanned with OKEN Scanner

यौम-ए-विलादत हज़रत मंसूर रह0

अलीम मंसूरी
एडवोकेट

हुकूक से महरूम मुसलमानों का खून बहाकर उम्मतेमोहम्मदिया को पायदार नहीं बनाया जा सकता। हक़ीकत तो सिर्फ इतनी है कि इश्क की नमाज़ सिर्फ खून की वज़ू से ही अदा की जा सकती है।

हज़रत मंसूर

पीलीभीत- आलॅ इण्डिया जमीयतुल मंसूर सोसाइटी (मंसूरी समाज) का जिला पीलीभीत की जानिब से ग्राम- नौगवां पकरिया में जनाब वसीउल्ला मंसूरी के दौलत खाने पर हज़रत मंसूर रह0 का यौम-ए-विलादत मनाया गया। इस मौके पर हज़रत मंसूर रह0 की जिन्दगी पर रोशनी डालते हुए मुकर्रिरीन (वक्ताओं) नें कहा कि आपकी पैदाइश 9 रज्जब 244 हिजरी पीर के रोज़ फारस के कस्बे तूर में हुई थी। आपका नाम मुगीसुल हसन बिन मंसूर था। आपका शुमार तीसरी हिजरी के नामवर सूफियान में होता है। आपको अर्बी, फार्सी, फिका, फलसफा और हिकमत पर कमाल हासिल था, जिसकी सैकड़ों किताबों आज मौजूद हैं। आपने आठ साल सात माह और पांच दिन कैद में गुज़ारे, इस दौरान आपकी बेशुमार करामते जहूर में आयीं। आपके इशरे पर कैदियों को कैदखाने से चला जाना, एक दिन कैद खाना और कैदी दोनो गायब हो जाना, दूसरे दिन कैदखाना, कैदी और आप उसी जगह पर थे, इतने पर भी आपके मुखालिफ माइल नहीं हुए और आप को जिलकदः बरोज़ मंगल 309 हिजरी को एक हज़ार कोड़े बरसाने की सजा मिली, आप हंसते रहे और इसके बाद आपके हाथ, पैर को तन से जुदा कर दिया गया। लाश को जलाकर राख को दरिया-ए-दजला में फेंक दिया गया, जिसमें एक तूफान की तुगियानी बहुत तेज़ हुई जो बगदाद की तरफ बढ़ रही थी। बसीहत के मुताबिक एक मुरीद नें हज़रत की दी हुई कमीज़ तूफान को दिखादी जिससे तूफान वापस चला गया और बगदाद शहर हज़रत हल्लाज की करामतों की नज़र बन गया।

इस मौके पर एक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास करके मंसूरी समाज के लोगों नें प्रदेश सरकार से मांग की है कि हल्लाज रह0 के विलादत के दिन को पिछड़ी जाति उत्थान दिवस (मंसूर दिवस) के रूप में घोषित किया जाये। बैठक में जिला सदर जनाब अनीस मियां मूसरी, सचिव अलीम मंसूरी एडवोकेट, मोहम्मद मियां, माजिद मंसूरी, वसीउल्ला मंसूरी, मौलाना नजीर मंसूरी, इसरार, असदउल्ला, मुस्तकीम भाई, अमानत मंसूरी, मेंहदी हसन, अज़हर, महबूब, वलीउल्लाह, डा0 नबीसउद्दीन, वली मोहम्मद, अली मोहम्मद, छोटे मंसूरी, एम.ए. मंसूरी, अशरफ मंसूरी के अलावा सैकड़ों हज़रात नें हिस्सा लिया।

Seraj Ahmad Mansoori
(Optician)
Mo.: 9415840598

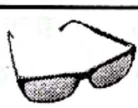
CHASMA POINT
Lens Eye Testing
-: Available Lenses :-
+ High Index, + English White, + U.V. White, + Resilens All Colour, + Photocromic All Colour, + Tinted Glass of all Colour, + Bifoeal-Executive, + Krykiock, + Progressive
66 Takia Road, Paharpur, Azamgarh

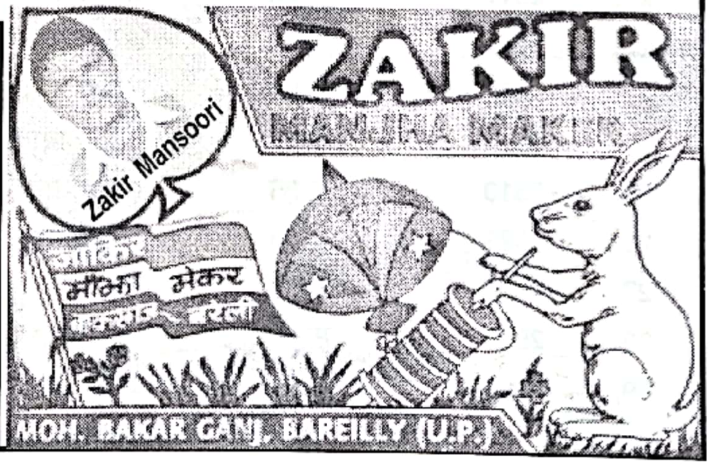

अनीस मन्सूरी के आवास पर रोजा इफ्तार पार्टी में रोजा इफ्तार करते हुए काबीना मंत्री नसीमुद्दीन सिद्दीकी, ईदगाह के नायब इमाम मौलाना खालिद रशीद फिरंगी महली व अन्य मंत्रीगण

जिला जेल लखनऊ में आयोजित रोजा इफ्तार में भाग लेते जिलाधिकारी श्री चंद्रभानु, अनीस मन्सूरी तथा मौलाना खालिद रशीद फिरंगी महली व अन्य गणमान्य व्यक्ति

Scanned with OKEN Scanner